SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:52, Issue: 7
December-2021, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

दिसंबर-2021

रु.5/-

तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

दि. ३०-११-२०२१ से
दि. ०८-१२-२०२१ तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
तिरुचानूर
श्री पद्मावती देवी का पुष्पयाग
०९-१२-२०२१

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितृनथ पितामहान्।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातृन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा।।२६।।
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि।

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-२६)

अर्जुन ने दोनों सेनाओं में स्थित अपने समस्त स्वजनों को जिन में पिता के भाई, पिता तुल्य पुरुष, पितामह, प्रपितामह, गुरुओं, मामाओं, पुत्रों, पौत्रों, मित्रों, ससुरों और शुभचिन्तकों को भी देखा।

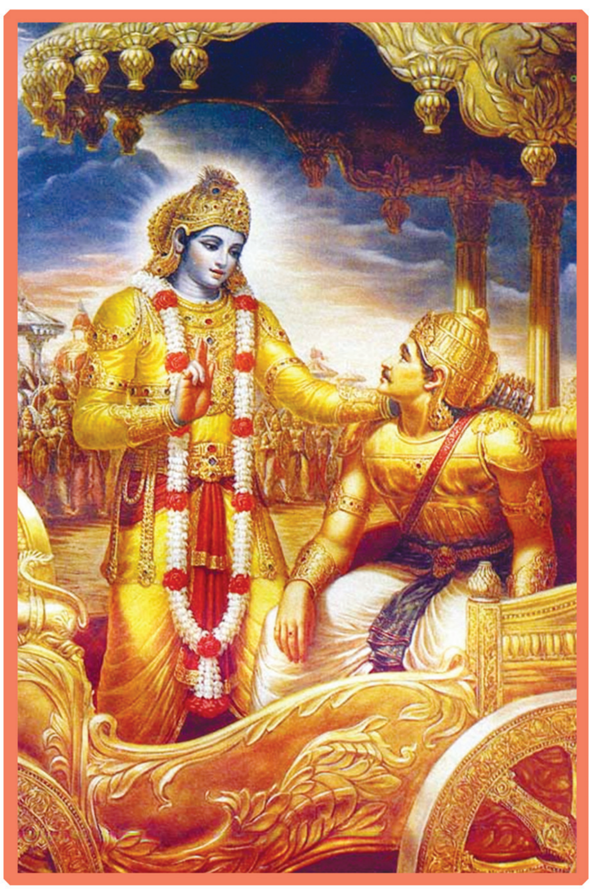

अग्रे कृत्वा कमपि चरणं जानुनै केन तिष्ठन्,
पश्चत्पार्थं प्रणयरस जुषा चक्षुषा वेक्षमाणः
सव्येतोत्रं करसरसिजे दक्षिणे ज्ञान मुद्रां
अविभ्राणो रथ मधिवसन् पातु नः सूतवेषः।।

(- गीता मकरंद, गीताचार्य स्तोत्र)

एक पैर आगे बढा कर, दूसरे पैर का घुटना टेक कर रथ में बैठनेवाले, अर्जुन को प्रेम से पूर्ण नेत्रों से देखनेवाले बाएँ हाथ से लगाम पकड कर, दाएँ हाथ से ज्ञान की मुद्रा धारण करनेवाले सूतवेष धारी भगवान श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करें।

एस.वी.गोसंरक्षण न्यास

गायों का संरक्षण, उसके द्वारा उपलब्ध आध्यात्मिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए सन् १९५६ में ति.ति.दे. ने गोसंरक्षण शाला और सन् २००२ में एस.वी.गोसंरक्षण न्यास को आरंभ किया है। दाताओं से विनती है कि इस न्यास को उदारतापूर्वक धनराशि दान में दें और गोशाला में रहनेवाले गऊओं के पालन-पोषण में अपना सहयोग दें। आयकर कानून के विभाग ८० (जी) के अनुसार आप आयकर से छूट प्राप्त कर सकते हैं।

दाता धनराशि को किसी भी राष्ट्रीय बैंक में 'एग्जिक्यूटिव अफ़सर, टी.टी.डी, तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट या चेक के रूप में भेज सकते हैं।

कृपया मांगड्राफ्ट या चेक इस पते पर भेजें-

द डायरेक्टर, एस.वी.गोसंरक्षण न्यास,
एस.वी.डैयरी फार्म, चन्द्रगिरि रोड,
ति.ति.दे.तिरुपति-५१७५०२.

दूरभाष: ०८७७-२२७७७७७, २२६४५७०.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५२ दिसंबर-२०२१ अंक-०७

विषयसूची

ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्तम	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया	07
श्री पद्मावती देवी के कार्तिक मास ब्रह्मोत्सव	डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी	13
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	18
हमारी संस्कृति और धर्म से युवाओं का विकास	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया	20
अरुंधती - एक तारिका	डॉ.के.एम.भवानी	22
मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	24
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
गो-महा सम्मेलन		31
तिरुचानूर देवी श्री पद्मावती	डॉ.जी.मोहन नायुडु	36
जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	38
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	40
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	42
वसंत वल्लभराया स्वामी मंदिर, वसंतपुरा	डॉ.एच.एन.गौरीराव	43
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	47
कमल के औषधीय गुण	डॉ.सुमा जोषि	48
नीतिकथा - भक्ति का बल	श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन	50
चित्रकथा - तिरुप्पावै	डॉ.एम.रजनी	52
क्विज	डॉ.एन.दिव्या	54

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

मुखचित्र - गजवाहनारूढ़ श्री पद्मावती देवी, तिरुचानूर।
चौथा कवर पृष्ठ - गोदादेवी चित्र।

अन्य विवरण के लिएः
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

लोकपावनी जगन्माता का वैभव

तिरुमल श्री बालाजी के दर्शनार्थ आनेवाले भक्तजन पहले तिरुचानूर स्थित माँ श्री पद्मावती देवी को दर्शन करने के बाद ही अपनी तीर्थयात्रा सफलीकृत बन जाती है। ब्रह्मांडनायकी, करुणास्वरूपिनी, दयालु, शक्तिस्वरूपिनी जगन्माता श्रीनिवास का पटरानी है। तिरुमल में हर शुक्रवार अभिषेक सेवा चालु होने के लिए प्रधान कारण स्वामीजी के हृदय में 'व्यूहलक्ष्मी' के रूप में माँ निवास करती है। इसलिए स्वामीजी के अर्चना के साथ-साथ देवी माँ का भी पूजाएँ संपन्न करते हैं।

कार्तिक मास में भगवती पद्मावती देवी को ब्रह्मोत्सव संपन्न करते हैं। पंचमी, शुक्रवार, उत्तराषाढ़ नक्षत्र युक्त शुभ लग्न में स्वर्ण कमल में पैदा हुई हैं। इसीलिए माँ का नाम पद्मावती रखा गया है।

पांचरात्रागम के अनुसार यहाँ का उत्सव, त्योहार, पूजा, अर्चनाएँ संपन्न की जाती हैं। माँ के अनेक रूप हैं। जिसमें से उनके आठ स्वरूप जिन को अष्ठलक्ष्मी कहते हैं। विष्णुजी को सदा पाद सेवा करते हुए भक्तों को अनुग्रहित करनेवाली कल्पवल्ली, करुणास्वरूपिनी अपने भक्तों को प्यार और स्नेह का आशीर्वाद देती है।

धन, संपदा, शांति, समृद्धि प्रधान करने वाली देवी माँ का ब्रह्मोत्सव के दौरान विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर भक्तजनों को अपना दर्शन देते हुए, मनोभिष्ट पूर्ण करते हैं। शरणागत होकर पूजा करे, तो ज्ञान प्रदान करती हैं। हमारी शस्त्रुओं पर सिंहस्वप्न बन जाती है। हमारे अंदर हुए अरिषड्वर्ग को दूर करके शक्ति, धैर्य प्रसाद करते है। पद्मसरोवर में चक्रस्नान (अवभृतस्नान) से हमारे सभी बुरे कर्म दूर हो जाते हैं। भक्तों पर देवी माँ की कृपा बनी रहती है।

जगज्ञननी माँ सदा स्वामीजी के हृदय पठल पर रहकर, भक्तों के मनोकामनाएँ पूरन करने के लिए स्वामीजी को सन्नद्ध करके, अपनी मातृ, हृदय से सदा हमको आशीश देते हैं।

कोविड-१९ केकारण ब्रह्मोत्सव एकांत में संपन्न करते हैं। इसलिए विश्व व्यापी महम्मारी समस्या को इस संसार से दूर करके विश्व मानव कल्याण बनाने के लिए हम सभी देवी माँ का प्रार्थना कर लेंगे।

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवंतु!!

शास्त्रों में ईश्वर और माताजी की कृपा पाने के लिये कई सारे उपाय और स्तोत्र वर्णित हैं। हमारे जीवन में सुख शांति एवं समृद्धि के लिए माँ लक्ष्मी की कृपा का होना आवश्यक है। माँ लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए ''श्रीसूक्तम'' अत्यंत शुभ एवं लाभप्रद स्तोत्र है।

श्रीसुक्तम की उत्पत्ति

आदिशंकराचार्य जी ने कैलाश में कठोर तप किया, उसके फल स्वरूप शिवजी ने विश्व कल्याण हेतु ''श्रीयंत्र'' और बावन ऋचा वाला स्तोत्र दिया। शंकराचार्य जी ने ''श्रीयंत्र'' को अपने मठ में स्थापित किया और बावन मंत्र अपने शिष्यों को ज्ञान के रूप में दिया। समय बीतने पर बावन में से सिर्फ सोलह ऋचाएँ बच गई, वे ही ''श्रीसूक्तम''के रूप में हैं। इस के अतिरिक्त ऋचाएं फलश्रुति के रूप में भी हैं।

श्रीसूक्तम देवी लक्ष्मी की स्तुति करनेवाला ऋग्वेद का एक श्लोक है। श्रीसूक्तम देवी लक्ष्मी की आराधना करने हेतु उनको समर्पित मंत्र हैं। इसे 'लक्ष्मी सूक्तम' भी कहते हैं। यह सूक्त, ऋग्वेद के खिलानि के अन्तर्गत आता है। इस सूक्त का पाठ धन-धान्य की अधिष्ठात्री, देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है।

ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्तम

- श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया
मोबाइल - 9825113636

आन्ध्र प्रदेश के तिरुमल श्री वेंकटेश्वर मंदिर में 'श्री वेंकटेश्वर के तिरुमंजनम' के समय जो पञ्चसूक्तम का पाठ किया जाता है, उसमें श्रीसूक्तम भी सम्मिलित है।

श्रीसूक्त ऋग्वेद का खिल सूक्त है जो ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के अन्त में उपलब्ध होता है। सूक्त में मन्त्रों की संख्या पन्द्रह है। सोलहवें मन्त्र में फलश्रुति है। बाद में ग्यारह मन्त्र परिशिष्ट के रूप में उपलब्ध होते हैं। इनको 'लक्ष्मी सूक्त' के नाम से स्मरण किया जाता है। आनन्द, कर्दम, श्रीद और चिक्लीत ये चार श्रीसूक्त के ऋषि हैं। इन चारों को लक्ष्मी के पुत्र बताया गया है। लक्ष्मी पुत्र हिरण्यगर्भ को भी श्रीसूक्त का ऋषि माना जाता है।

श्रीसूक्त का चौथा मन्त्र बृहती छन्द में है। पांचवाँ और छटा मन्त्र त्रिष्टुप छन्द में हैं। अन्तिम मन्त्र का छन्द प्रस्तार पंक्ति है। शेष मन्त्र अनुष्टुप छन्द में हैं।

श्रीशब्दवाच्या लक्ष्मी इस सूक्त की अधिदेवता हैं।

श्रीसूक्त का विनियोग

लक्ष्मी की आराधना, जप, होम आदि में सूक्त का विनियोग किया जाता है। महर्षि बोधायन, वशिष्ठ आदि ने इसके विशेष प्रयोग बतलाये हैं। श्रीसूक्त की फलश्रुति में भी इस सूक्त के मन्त्रों का जप तथा इन मन्त्रों के द्वारा होम करने का निर्देश किया गया है।

आराधना क्रम में श्रीसूक्त के पन्द्रह मन्त्रों का इस क्रम से विनियोग किया जाता है -

1-आवाहन, 2-आसन, 3-पाद्य, 4-अर्घ्य, 5-आचमन, 6-स्नान, 7-वस्त्र, 8-भूषण, 9-गन्ध, 10-पुष्प, 11-धूप, 12-दीप, 13-नैवेद्य, 14-प्रदक्षिणा, 15-उद्वासन।

श्रीसूक्त के मंत्रों के विषय इस प्रकार हैं -

1) भगवान से लक्ष्मी को अभिमुख करने की प्रार्थना

2) भगवान से लक्ष्मी को अभिमुख रखने की प्रार्थना

3) लक्ष्मी से सान्निध्य के लिए प्रार्थना

4) लक्ष्मी का आवाहन

5) लक्ष्मी की शरणागति एवं अलक्ष्मी के नाश की प्रार्थना

6) अलक्ष्मी और उसके सहचारियों के नाश की प्रार्थना

7) मांगल्य प्राप्ति की प्रार्थना

8) अलक्ष्मी और उसके कार्यों का विवरण देकर उसके नाश की प्रार्थना

9) लक्ष्मी का आवाहन

10) मन, वाणी आदि की अमोघता तथा समृद्धि की स्थिरता के लिए प्रार्थना

11) कर्दम प्रजापति से प्रार्थना

12) लक्ष्मी के परिकर से प्रार्थना

13) लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिए पुनः भगवान से प्रार्थना

14) पुनः लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिए भगवान से प्रार्थना

15) भगवान से लक्ष्मी के अभिमुख की प्रार्थना

16) फलश्रुति

परिशिष्ट-फलश्रुति (लक्ष्मीसूक्त) के मन्त्रों के विषय हैं -

1) सौख्य की याचना

2) समस्त कामनाओं की पूर्ति की याचना

3) सान्निध्य की याचना

4) समृद्धि के स्थायित्व के लिए प्रार्थना

5) देवताओं में लक्ष्मी के वैभव का विस्तार

6) सोम की याचना

7) मनोविकारों का निषेध

8) लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये प्रार्थना

9) लक्ष्मी की वन्दना

10) लक्ष्मी-गायत्री

11) अभ्युदय के लिये प्रार्थना

श्रीदेवी के नाम

श्रीसूक्त के 15 मन्त्रों में श्री लक्ष्मी के ये नाम मिलते हैं-

हिरण्यवर्णा, हरिणी, सुवर्णरजतस्रजा, चन्द्रा, हिरण्मयी, लक्ष्मी अनुपगामिनी-अश्वपूर्वा, रथमध्या, हस्तिनाद प्रयोधिनी, श्री, देवी-का, सोस्मिता, हिरण्यप्राकारा, आर्द्रा, ज्वलन्ती, तृप्ता, तर्पयन्ती, पद्मे स्थिता, पद्मवर्णा-प्रभासा, यशसा ज्वलन्ती, देवजुष्टा, उदारा, पद्मनेमि-आदित्यवर्णा-गन्धद्वारा, दुराधर्षा, नित्यपुष्टा, करीषिणी, ईश्वरी-माता, पद्म मालिनी-पुष्करिणी, यष्टि, पिङ्गला-पुष्टि, सुवर्णा, हेममालिनी, सूर्या।

परिशिष्ट (फलश्रुति) के 11 मन्त्रों में ये नाम और मिलते हैं -

पद्मानना, पद्मोरू, पद्माक्षी, पद्मसम्भवा-अश्वदायी, गोदायी, धनदायी, महाधना-पद्मविपद्मपत्रा, पद्मप्रिया, पद्मदलायताक्षी, विश्वप्रिया, विश्वमनोनुकूला-सरसिजनिलया, सरोजहस्ता, धवलतरांशुक गन्धमाल्य शोभा, भगवती, हरिवल्लभा, मनोज्ञा, त्रिभुवन भूतिकारी-विष्णुपत्नी, क्षमा, माधवी, माधवप्रिया, प्रियसखी, अच्युत वल्लभा-महादेवी, विष्णु-पत्नी।

श्रीसूक्त साधना के लिए उत्तम शुभ दिन

सुख समृद्धि और सफलता से भर जाता हैं जीवन श्रीसूक्त के मंत्रों का दीपावली की रात में जप और हवन करने से बहुत अधिक लाभ प्राप्त होते हैं।

संसार में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो लक्ष्मी की कृपा से सुख-समृद्धि और सफलता की कामना न करता हो। राजा, रंक, छोटे, बड़े सभी चाहते हैं कि लक्ष्मी सदा उनके घर में निवास करें और व्यक्ति धन की प्राप्ति के लिए प्रयत्न भी करता है। ऋग्वेद में माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए 'श्रीसूक्त' के पाठ और मन्त्रों के जप तथा मन्त्रों से हवन करने पर मन-चाही मनोकामना पूरी होने की बात कही गयी है। अगर कोई दीपावली के दिन अमावास्या की रात में श्रीसूक्त का पाठ और मंत्रों से जप करता है उसकी सारी इच्छाएं पूरी होकर ही रहती हैं।

श्रीसूक्त में पन्द्रह ऋचाएं हैं, माहात्म्य सहित सोलह ऋचाएं मानी गयी हैं। क्योंकि किसी भी स्तोत्र का बिना माहात्म्य के पाठ करने से फल की प्राप्ति नहीं होती। नीचे दिये श्रीसूक्त के मंत्रों से ऋग्वेद के अनुसार दीपावली की रात में 11 बजे से लेकर 1 बजे के बीच-108 कमल के पुष्प या 108 कमल गट्टे के दाने को गाय के घी में डुबोकर बेलपत्र, पलाश एवं आम की समिधाओं से प्रज्वलित यज्ञ में आहुति देने एवं श्रद्धापूर्वक लक्ष्मी जी का षोडषोपचार पूजन करने से व्यक्ति वर्तमान से लेकर आनेवाले सात जन्मों तक निर्धन नहीं हो सकता है।

श्रीसूक्त पाठ कब व क्यों करें?

ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्त-पाठ साधना

(एक साधना, धन की अधिष्ठात्री देवी माँ लक्ष्मी जी की शीघ्र कृपा प्राप्ति के लिए)

यह साधना ऋग्वेद में है। धन की अधिष्ठात्री देवी माँ लक्ष्मी जी की शीघ्र कृपा प्राप्ति के लिए ऋग्वेद में वर्णित श्रीसूक्त का पाठ एक ऐसी साधना है जो कभी व्यर्थ नहीं जाती है श्री महालक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए ही शास्त्रों में नवरात्रि, दीपावली, शुक्रवार या सामान्य दिनों में भी श्रीसूक्त के पाठ का महत्व और विधान बताया गया है।

दरिद्रता और आर्थिक तंगी से छुटकारे के लिए यह अचूक प्रभावकारी माना जाता है। अगर संस्कृत में पाठ न कर पा रहे हो तो उसे हिन्दी में धीरे-धीरे बिलकुल साफ पढे। श्रीसूक्त का पाठ करते समय पूरा ध्यान माँ लक्ष्मी की तरफ रहना चाहिए। नवरात्री, दीपावली, शुक्रवार को तो इसको एक से अधिक बार पढे।

माँ महालक्ष्मी के आह्वान एवं कृपा प्राप्ति के लिए श्रीसूक्त पाठ की विधि द्वारा आप बिना किसी विशेष व्यय के भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक माँ महालक्ष्मी की आराधना करके आत्मिक शांति एवं समृद्धि को स्वयं अनुभव कर सकते हैं। यदि संस्कृत में मंत्र पाठ संभव न हो तो हिंदी में ही पाठ करें।

(दीपावली पर्व पांच पर्वों का महोत्सव है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी (धनतेरस) से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भैयादूज) तक पांच दिन चलने वाला दीपावली पर्व धन एवं समृद्धि प्राप्ति, व्यापार वृद्धि ऋण मुक्ति आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनाया जाता है। श्रीसूक्त का पाठ धन त्रयोदशी से भैयादूज तक पांच दिन संध्या के समय किया जाए तो अति उत्तम है।)

गोधूलि वेला में साधक स्वच्छ होकर पूर्वभिमुख होकर सफेद आसन पर बैठें। अपने सामने लकड़ी की पाट पर लाल अथवा सफेद कपड़ा बिछाएं। उस पर एक थाली में अष्टगंध अथवा कुंकुम (रोली) से स्वस्तिक

चिह्न बनाएं। गुलाब के पुष्प की पत्तियों से थाली सजाएं, संभव हो तो कमल का पुष्प भी रखें। उस गुलाब की पत्तियों से भरी थाली में मां लक्ष्मी एवं विष्णु भगवान का चित्र अथवा मूर्ति रखें। साथ ही थाली में श्रीयंत्र, दक्षिणावर्ती शंख अथवा शालिग्राम में से जो भी वस्तु आपके पास उपलब्ध हो रखे। सुगंधित धूप अथवा गुलाब की अगरबत्ती जलाएं। थाली में शुद्ध गौ घी का एक दीपक भी जरूर जलाएं। खीर अथवा मिश्री का नैवेद्य रखें। तत्पश्चात् श्रीसूक्त की ऋचाओं का पाठ करें।

आपके जीवन में सदैव मंगल हो इस दृष्टि से जो ऋग्वेद में बताया गया है कि यदि इन ऋचाओं का पाठ करते हुए शुद्ध गौ घी से हवन भी किया जाए तो इसका फल द्विगुणित होता है। सर्वप्रथम दाएं हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र से पूजन सामग्री एवं स्वयं पर छिड़कें।

मंत्र -

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यान्तरः शुचिः।।

अर्थ-

पवित्र हो या अपवित्र अथवा किसी भी अवस्था में हे जो पुंडरीकाक्ष (विष्णु भगवान) का स्मरण करता है वह अंदर और बाहर से पवित्र हो जाता है।

उसके बाद निम्न मंत्रों से तीन बार आचमन करें-

श्री महालक्ष्म्यै नमः ऐं आत्मा तत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

अर्थ-

श्री महालक्ष्मी को मेरा नमन। मैं आत्मा तत्व को शुद्ध करता हूँ। श्री महालक्ष्म्यै नमः ह्रीं विद्या तत्वं शोधयामि नमः स्वाहा अर्थ- श्री महालक्ष्मी को मेरा नमन। मैं विद्या तत्व को शुद्ध करता हूँ। श्री महालक्ष्म्यै नमः क्लीं शिव तत्वं शोधयामि नमः स्वाहा अर्थ-श्री महालक्ष्मी को मेरा नमन। मैं शिव तत्व को शुद्ध करता हूँ। (तत्पश्चात् दाएं हाथ में चावल लेकर संकल्प करें।)

हे माँ लक्ष्मी, मैं समस्त लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए श्रीसूक्त माँ महालक्ष्मी जी की जो साधना कर रहा हूँ, आपकी कृपा के बिना कुछ भी कहाँ संभव है। हे माता! श्री लक्ष्मी, मुझ पर प्रसन्न होकर साधना के सफल होने का आशीर्वाद दें। (हाथ के चावल भूमि पर चढ़ा दें।) विनियोग करें (दाएं हाथ में जल लें।)

मंत्र :

हिरण्यवर्णामिति पंषदषर्चस्य सूक्तस्य, श्री आनन्द, कर्दम चिक्लीत, इन्दिरासुता महाऋषयः।

श्रीरग्नि देवता। आद्यस्तिस्तोनुष्टुभः चतुर्थी वृहती।

पंचमी षष्ठ्यो त्रिष्टुभो, ततो अष्टावनुष्टुभः अन्त्याः प्रस्तारपंक्तिः।

हिरण्यवर्णामिति बीजं, ताम् आवह जातवेद इति शक्तिः

कीर्ति ऋद्धि ददातु में इति कीलकम्।

श्री महालक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः। (जल भूमि पर छोड़ दें।)

अर्थ-

इस पंद्रह ऋचाओं वाले श्रीसूक्त के कर्दम और चिक्लीत ऋषि हैं अर्थात् प्रथम तंत्र की इंदिरा ऋषि है, आनंद कर्दम और चिक्लीत इंदिरा पुंज है और शेष

चौदह मंत्रों के द्रष्टा हैं। प्रथम तीन ऋचाओं का अनुष्टुप, चतुर्थ ऋचा का बहती, पंचम व षष्ठ ऋचा का त्रिष्टुप एवं सातवीं से चौदहवीं ऋचा का अनुष्टुप् छंद हैं।

पंद्रह व सोलहवीं ऋचा का प्रसार भक्ति छंद है। श्री और अग्नि देवता हैं। 'हिरण्यवर्णा' प्रथम ऋचा बीज और 'कां सोस्मितां' चतुर्थ ऋचा शक्ति है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए विनियोग है। (हाथ जोड़ कर लक्ष्मीजी एवं विष्णुजी का ध्यान करें।) गुलाबी कमल दल पर बैठी हुई, पराग राशि के समान पीतवर्णा, हाथों में कमल पुष्प धारण किए हुए, मणियों युक्त अलंकारों को धारण किए हुए, समस्त लोकों की जननी माँ श्रीमहालक्ष्मी को हम वंदना करते हैं।

इस सूक्त की ऋचाओं में से 15 ऋचाएँ मूल 'श्रीसूक्त' माना जाता है। यह सूक्त ऋग्वेद संहिता के अष्टक 4 अध्याय 4 के अन्तिम मण्डल 5 के अन्त में 'परिशिष्ट' के रूप में आया है। इसी को 'खिल-सूक्त' भी कहते हैं। मूलतः यह ऋग्वेद में आनंदकर्दम ऋषि द्वारा श्री देवता को समर्पित काव्यांश है। निरुक्त एवं शौनक आदि ने भी इसका उल्लेख किया है। इस सूक्त की सोलहवीं ऋचा फलश्रुति स्वरूप है। इसके पश्चात् 17 से 25 वीं ऋचाएँ फल-स्तुति रूप ही हैं, जिन्हें 'लक्ष्मी-सूक्त' कहते हैं। सोलहवीं ऋचा के अनुसार श्रीसूक्त की प्रारम्भिक 15 ऋचाएँ कर्म-काण्ड-उपासना के लिए प्रयोज्य हैं। अतः ये 15 ऋचाएं ही लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार के आगम-तन्त्रानुसार साधना में प्रयुक्त होती हैं।

श्रीसूक्तानुष्ठान पद्धति

अनेक आचार्यों ने श्रीसूक्त के नित्य 28, 108 अथवा 1000 पाठ के विधान बतलाये हैं। एक दिन में एक हजार पाठ करने से संकल्प-सिद्धि होती है।

प्रातःकाल स्नान सन्ध्या आदि करके पवित्रता पूर्वक महालक्ष्मी जी की प्रतिमा अथवा चित्र के सामने पूर्व की ओर मुंह करके आचमन, प्राणायाम और संकल्प करें। फिर चित्र में विराजमान महालक्ष्मी का ध्यान करके षोडषोपचार पूजा करें। धूप-दीप करें, खोवे की मिठाई का नैवेद्य लगाये। नमस्कार और प्रदक्षिणा समर्पण करे। यह नित्य-पूजा का क्रम है। इसमें आवाहन और विसर्जन की आवश्यकता नहीं है। नित्य पूजा में 'ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः' इस मन्त्र से पूजा करें। तदनन्तर संकल्प के अनुसार श्रीसूक्त की आवृति करें। श्रीसूक्त वेदोक्त है। अतः इसे शुद्ध पाठ के रूप में सीख लेना चाहिए।

पुरश्चरण विधान

श्रीसूक्त के पाठ विधान में मुख्यतः एक-एक ऋचा का जप अथवा पूरे सूक्त के पाठों का जप होता है। किसी भी मन्त्र की सिद्धि के लिए पहले मन्त्र का पुरश्चरण अवश्य करना चाहिए। श्रीसूक्त के बारह हजार पाठ का पुरश्चरण सर्वोत्तम माना गया है।

इस तरह सर्व कामना सिद्धी हेतु ''श्रीसुक्तम'' से श्रीयंत्र, श्री लक्ष्मीनारायण भगवान का पूजा विधान और मंत्र जप अनुष्ठान करने से साधक की मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होती हैं।

एक बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि श्री महालक्ष्मीजी की कृपा प्राप्त करने के लिए साथ-साथ में श्रीहरि विष्णु की उपासना भी (श्री विष्णु सहस्त्रनाम) अवश्य करनी चाहिए, दंपती की उपासना से बहुत जल्दी फल प्राप्त होता है।

जय श्रीमन्नारायण

श्री पद्मावती देवी के कार्तिक मास ब्रह्मोत्सव

- डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी
मोबाइल - 9989210204

तिरुचानूर में श्री पद्मावती देवी को समर्पित नित्य, वार, पक्ष, मास, वार्षिकोत्सव सेवाओं में ब्रह्मोत्सव अत्यंत प्रधान है। 'तिरुचाना' कहने से श्रीकांता अर्थ होता है। वही श्री महालक्ष्मी है। संपदाओं की उस माँ को कुछ लोग 'अलमेलुमंगा' कहते है। पुहुप पर प्रकाशमान दिव्य वनिता ही अलर्-मेल्-मंगा है। उस जगन्माता को पद्मावती कहते है। क्योंकि वह सहस्र दलों के सोने के कमल में अवतरित हुई थी। अलमेलुमंगा तिरुमल आनंदनिलय की पटरानी है। उसके अर्चामूर्ति के रूप में विराजमान दिव्यक्षेत्र तिरुचानूर है। इसीको 'अलमेलुमंगपट्नम' कहते है।

कार्तिक मास, शुक्ल पंचमी, शुक्रवार को उत्तराषाढ नक्षत्र में पद्मावती देवी का जन्म हुआ था। उसी दिन पांचरात्रागमम् के अनुसार अलमेलुमंगापुरम् में पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव हर वर्ष परम वैभवोपेत से आयोजित किया जाता है। भगवान प्रार्थना, अंकुरार्पण, ध्वजारोहण इत्यादि प्रक्रिया युक्त ब्रह्मोत्सव, प्लवोत्सव, ध्वजारोहण के बाद हविर्निवेदन क्षमा प्रार्थना से उत्सव सम्पन्न होता है।

तिरुचानूर में आयोजित कार्तिक ब्रह्मोत्सव के उपलक्ष्य में तिरुमल से पद्मावती देवी के लिए तुलसी, हल्दी, रेशमी वस्त्र और प्रसाद इत्यादी वस्तुओं को तिरुपति के पुरवीथियों में जुलूस करवाकर तिरुचानूर ले आने की प्रक्रिया आज भी किया जा रहा है।

ध्वजारोहण :- कार्तिक मास में आरंभ होने वाले श्री पद्मावती देवी माता का ब्रह्मोत्सव ध्वजारोहण से प्रारंभ होता है। ध्वज आलय में जीवस्थान है इसीलिए ''ध्वजो जीवस्सउच्यते'' कहते है। सभी देवताओं को इस ब्रह्मोत्सव में आमंत्रण करना ही इस ध्वजारोहण का अंतरार्थ है।

श्री पद्मावती माता के कार्तिक मास ब्रह्मोत्सव में प्रथम वाहन लघुशेषवाहन है। शेष वैकुण्ठ में नित्य सूर्य के रूप में लक्ष्मीनारायण की सेवा करते है। विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के अनुसार भगवान शेषी है और बाकी सभी शेषभूत है। पद्मावती देवी माता उस लघुशेषवाहन में आसीन होकर सभी भक्त जनों को दर्शन देते है।

महाशेषवाहन :- श्री पद्मावती माताजी के कार्तिक मास ब्रह्मोत्सव में दूसरा वाहन महाशेषवाहन है। आदिशेष श्रीनिवास के निवास, शय्या, आसन, पादुक, अंगवस्त्र, तकिया, धूप-वर्षा से रक्षा प्रदान करनेवाले छाता, सेवक, शरीर भेद धारण करके विष्णु भगवान के शेषतल्पवान बना। श्रीमन्नारायण की पटरानी अलमेलुमंगा माता के वाहन बनकर अपने विशेष ज्ञानबल के साथ दास्य भक्ति को प्रकट कर रहे है। शेषवाहन के द्वारा दास्य भक्ति प्रकट होती है। श्री पद्मवाती देवी इस महाशेषवाहन पर आरूढ होकर शोभायात्रा के लिए जब निकलती है, तो ऐसा लगता है मानों देवी भक्तजनों को शेष-शेषी संबंध का बोध करा रही हो। कोविड-१९ के कारण ब्रह्मोत्सव एकांत में संपन्न की जाती हैं।

हंसवाहन :- वार्षिक ब्रह्मोत्सव में दूसरे दिन रात को श्रीहरि की अनपायिनी हंसवाहन में वीणापाणी, विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के रूप में भक्तजनों को दर्शन देते हुए तिरुचानूर की पुरवीथियों में यात्रा के लिए निकलती है। जिस प्रकार दूध एवं पानी को अलग करने की निपुण शक्ति हंस पक्षी में है, उसी प्रकार वह गुणागुण विलक्षण ज्ञान के लिए भी संकेतात्मक है। इहलोक के भवबंधनों से विमुक्त होनेवाले जीव की आत्मा हंस है। ऐसे हंसवाहन पर श्रीहरिप्रिया देवी आसीन होना समुचित वैभव ही है।

मोतीवितानवाहन :- श्री पद्मावती देवी माता के ब्रह्मोत्सव के तीसरे दिन सुबह मोतियों से लदी चंदोवाहन पर मंगापुर पुरवीथियों में माता विचरण करती है। बहुत सुन्दर दिखने वाली मोती श्रीहरि की हृदयेश्वरी के लिए प्रीति प्रधान है। मोतियों का हमारे भारतीय संस्कृति में प्रत्येक स्थान है। मोतियों को अक्षत के रूप में उपयोग करना, आभूषण के रूप में धारण करना हमारा सदाचार है।

सिंहवाहन :- तीसरे दिन रात को श्री पद्मावती देवी सिंहवाहन पर आरूढ होकर शोभायात्रा के लिए निकलती है। सिंहवाहन शक्ति और गमनशक्ति पराक्रम के लिए प्रतीक है। ब्रह्मोत्सव में सिंहवाहन पर दर्शन देते हुए माता यह संकेत देती है कि वे दुष्टजन के संहार और भक्तजनों की रक्षा के लिये निकल रही है।

कल्पवृक्षवाहन :- कार्तिक मास ब्रह्मोत्सव के चौथे दिन सुबह श्री महालक्ष्मी देवी कल्पवृक्षवाहन पर आसीन होकर भक्तजन को दर्शन देते है। सभी इच्छाओं को पूर्ति करनेवाला वृक्ष कल्पवृक्ष है। देव, असुर अमृत प्राप्ति के लिए जब क्षीरसागर का मंथन कर रहे थे, तब सभी ऋतुओं में हरा रहकर इच्छुकों की संकल्पों की पूर्ति करनेवाला कल्पवृक्ष क्षीरसागर से उद्भव हुआ। इस वाहन पर विराजित देवी ऐहिक तथा आत्मिक सुखों को प्रदान करती हैं।

हनुमंतवाहन :- चौथे दिन रात को माता हनुमंतवाहन पर विराजमान होकर भक्तजनों को दर्शन देते है। त्रेतायुग में आदिलक्ष्मी ने सीता के रूप में जन्म लिया और श्रीराम से विवाह किया। जब सीता का अपहरण हुआ, हनुमान लंका पहुँचकर सीता का दर्शन हनुमान को हुआ। और सीता माता से कहाँ की स्वामी उनकी रक्षा करेंगे, नही तो वे स्वयं सीता को अपने कंधों में बिठाकर भगवान के पास ले जायेंगे। वही सीतामाता कलियुग में श्री पद्मावती देवी के रूप में अवतरित हुई। हनुमंतवाहन पर आसीन होकर माता भक्तों को शक्ति, यश, धैर्य एवं स्वास्थ्य विशेष रूप में प्रदान करती है।

पालकीवाहन :- श्रीहरि की पटरानी पाँचवें दिन के ब्रह्मोत्सव में पालकी वाहन पर दर्शन देती है। इस पालकी को कुछ सुन्दर युवतियाँ ले जाती है। इस दृश्य को अन्नमय्या ने अपने संकीर्तन में इस प्रकार वर्ण दृश्य दिखाया।

कुलुकक नडवरो कोम्मलाला
जलजल रालीनी जाजुलु मायम्मकु...

यानी देवी माता पालकी में बैठी बाल बिखर रहे है, मुख पर पसीना दिखाई दे रहा है। वे ठीक तरह से पालकी में बैठ नही पा रही थी। ये सब देखकर अन्नमय्या ने उन सुन्दरियों को धीरे-धीरे चलते हुए पालकी को ले जाने के लिये कहा!

गजवाहन :- ब्रह्मोत्सव के पाँचवें दिन रात को लक्ष्मीदेवी स्वर्ण गजवाहन पर विराजमान होकर भक्तजन कोटि को दर्शन देती है। सभी वाहनों में

से गजवाहन प्रधान है माता जी को। असंख्य भक्तजन इस वाहनसेवा में उपस्थित होते है। श्रीहरि और श्री पद्मावती देवी के प्रथम मिलन का मूल कारक गज ही है। दिग्गज अपने सूंड से स्वर्ण कलश में आकाश गंगा से स्वच्छ पानी लाकर श्री पद्मावती देवी का अभिषेक करते है।

सर्वभूपालवाहन :- श्री पद्मावती देवी ब्रह्मोत्सव के छठवें दिन सुबह सर्वभूपालवाहन पर आरूढ़ होकर तिरुचानूर की पटरानी भक्तों को दर्शन देती है। 'जगत की जननी, विश्वरूपिणी, वरप्रदायिनी, हरिनिवासिनी, अमृतसमुद्र पुत्री, श्रीदेवी' सर्वभूपालवाहन में विराजमान देवदेवी का दर्शन अनुग्रह प्राप्त करने से राज सुख प्राप्त कर जीव चरितार्थ बनेंगे।

गरुडवाहन :- ब्रह्मोत्सव के छठवें दिन रात को माता गरुडवाहन में दर्शन देती है। गरुड को वेदस्वरूप माना जाता है। रूढिवादियों के अनुसार गरुड के दो पंख ज्ञान एवं वैराग्य के चिह्न है। दास के रूप, मित्र के रूप में, आसन के रूप में इस प्रकार अनेकानेक विधियों से श्रीनिवास और श्री पद्मावती देवी की सेवा गरुडाल्वार करते है। माता का यह वाहन मोक्षदायक है, सकल संपदाप्रद है, श्रेयोदायक भी है।

सूर्यप्रभावाहन :- श्रीहरिप्रिया सूर्यप्रभावाहन पर विराजमान होकर सातवें दिन सुबह भक्तजनों को दर्शन देती है। भगवान का स्वरूप ही तेजोवंत है। वह तेज सूर्य भगवान में प्रधान रूप में विद्यमान है। श्रीदेवी सूर्यप्रभावाहन पर आरूढ़ होकर भक्तों को स्वास्थ्य, ऐश्वर्य एवं संपदा अनुग्रहीत करती है।

चंद्रप्रभावाहन :- कार्तिक ब्रह्मोत्सव के सातवें दिन रात को श्री पद्मावती माता चन्द्रप्रभावाहन में दर्शन देती है। मन की शांति एवं मानसिक आनंद का कारण चन्द्र है। इस शीतल श्वेत चन्द्रप्रभावाहन पर आरूढ़ हुई माता का दर्शन करने से मन में शांती, आनंद और सुख प्राप्त कर सकते हैं।

रथ-यात्रा :- श्रीदेवी ब्रह्मोत्सव के आठवें दिन प्रातः समय में रथ-यात्रा वैभवपूर्ण रीति से सम्पन्न होती है। सूर्योदय के कांतिमय किरणों के संग देवी माता रथ पर विराजमान होती है। भक्तजन रथ की रस्सियों को

खींचते हुए तिरुचानूर की चार माडावीथियों में धीरे-धीरे रथ-यात्रा करते है। अन्य वाहनों में भक्त केवल दर्शक ही बने रहते है। भक्त को निजी तौर से भाग लेने का अवसर नही मिलता। रथ-यात्रा में भक्तगण सभी रथ खींचते है इसलिये यह उत्सव अत्यंत वैभव एवं कोलाहल से भरा रहता है। शरीर रथ है। बुद्दि सारथी है, मन लगाम है, इंद्रिय घोडे है, इंद्रियों के काम दौडने के मार्ग है। आत्मा रक्षक है। घोडों जैसे इंद्रियों को मन रूपी लगाम से नियंत्रित करके, रथ रूपी शरीर को आपकी बुद्दि नाम के सारथी द्वारा अच्छे मार्ग पर चलना होगा।

अश्ववाहन :- श्री पद्मावती देवी के कार्तिक मास ब्रह्मोत्सव के आठवें दिन रात को माता अश्ववाहन पर आसीन होकर भक्तजनों के दर्शन देती है। मनुष्य के इंद्रियों की तुलना घोडों से की जाती है, श्रीहरि और श्रीदेवी के प्रथम मिलन में वेंकटेश्वरस्वामी अश्ववाहन पर आरूढ़ होकर भक्तों को दर्शन देते हुए यह हितोपदेश देती है कि सभी को इंद्रिय नियंत्रक बनकर जीना होगा। अश्ववाहन पर आसीन होकर माता भक्तों के कलिदोषों का हरण करती है।

पंचमीतीर्थ महोत्सव :- पंचमीतीर्थ महोत्सव ब्रह्मोत्सव के अखरि दिन मनाया जाता है। इस दिन को 'तिरुचानूर पंचमीतीर्थम्' या 'श्रीपंचमी' भी कहते है। इस महान अवतारोत्सव के दिन तिरुमल से श्रीहरि की ओर से, तिरुचानूर अलमेलुमंगा के लिये कुंकुम, हल्दी, चंदन, कंगन आभूषण, फूल-फल एवं नये रेशमी वस्त्र वेदमंत्रों के साथ अंबारी (हाथी) पर लाकर माता को समर्पित करते है। मंदिर के चारों ओर परिक्रमा करने के बाद विशेष पूजा और चूर्णाभिषेक होता है। इस पूजा के बाद देवी की प्रतिमा और सुदर्शनचक्र को आठ स्तंभों वाले मंडप में ले जाते है, जो पद्मसरोवर के तट पर स्थित है, 'पडि' श्रीवारि पडि श्रीशुकनूर की वीथियों से होकर मंदिर पहुँचती है। वहाँ पर स्नपन तिरुमंजन मंडप में होगा। चक्रस्नान भी होता है। इस शुभ अवसर पर हजारों भक्त सरोवर में स्नान करते है जिस से अनेक पाप दूर हो जाते है। संध्या के समय देती को अलंकृत करके गंगुड्रामंडप में आस्थान के लिए ले जाते है। वहाँ से फिर देवी को मंदिर में ले जाते है। तिरुचानूर का पंचमीतीर्थम् का वैभव नयनपर्व प्रदान करता है।

वेङ्कटाचल के अन्य तीर्थ

1. पांडव तीर्थम्

श्रीकृष्ण के परामर्श के अनुसार पंच पांडवों ने (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव) वेङ्कटाचल की यात्रा की। एक वर्ष भर यहाँ वास किया। यहाँ के क्षेत्र पालकों से सुरक्षा भी प्राप्त की। यहाँ के तीर्थों के जल का पान किया। पवित्र स्नान किये। एक वर्ष के बाद युधिष्ठिर ने सपना देखा कि एक वर्ष के वेङ्कटाद्रि वास (महा-तीर्थ) से उनके सारे पाप धुल गये। उन्हें पवित्र होने का विश्वास मिला। इससे विजय प्राप्ति की भावना संतुष्ट हुई। अपने स्वाधिकार प्राप्त करने की शक्ति से मण्डित होकर ही वे हस्तिनापुर की ओर चले।

पांडवों के निवास स्थान पर विलसित तीर्थ उनके नाम से अभिहित होकर पांडव तीर्थ हुआ। यह तीर्थ श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के मंदिर से लगभग एक मील की दूरी पर ईशान्य दिशा में है। इसके पास ही एक बडी चट्टानी गुफा है। कहा जाता है कि इसे पांडवों ने अपने निवास के लिए बनाया है।

उक्त तीर्थ को गोगर्भ तीर्थम् भी कहा जाता है। एक जबरदस्त दबाव के कारण पश्चिमी पक्ष में यहाँ एक जल वाहिका बनी है। दबाव पक्ष गाय के गर्भ के समान रहा। इसीलिए यह गोगर्भ तीर्थ बना। इस तीर्थ में पवित्र स्नान के लिए रविवार का दिन महत्वयुक्त माना जाता है। इस पर भी वह दिन वैशाख शुद्ध द्वादशी का दिन हो अपूर्व होता है। वैसे वैशाख शुद्ध द्वादशी का दिन तीर्थ स्नान के लिए महत्वपूर्ण है। मंगलवार का दिन भी उसी प्रकार की महत्ता से युक्त माना जाता है। इन दिनों में इस तीर्थ में पवित्र स्नान करनेवाले भक्तों को अतुलित आनंद और स्वर्ग सुख प्राप्त होता है। (वरा. पु. भाग - 1, अ. - 8, श्लो. 23 - 27 तथा भाग - 2, अ. - 1, श्लो. 70 - 71)।

2-4. जरहर, वलिघ्न और रसायन तीर्थम्

ये तीनों तीर्थ वेङ्कटाद्रि पर स्थित गुफाओं में हैं। स्वामिपुष्करिणी की पूर्व दिशा में उससे बाईस बाण की

दूरी पर हैं। भगवान की माया के कारण ये ओझल हो गये हैं। फलतः सामान्य मानव इनको अपनी आँखों से देख नहीं सकते। (वरा. पु. भाग - 1, अ. - 40, श्लो. 27 - 29)।

5. कटाह तीर्थम्

यह श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान के विमान की प्रदक्षिणा मार्ग की उत्तरी दिशा में है। कटाह तीर्थ को ''तोट्टि तीर्थम्'' भी कहते हैं। श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का अभिषेक जल (तीर्थ) इस कटाह से इकट्ठा होता है। भगवान का अभिषेक शुक्रवार को मनाया जाता है। अभिषेक जल में चंदन और केसर मिला रहता है। इसके तीर्थ को तीन बार छोटी मात्रा में स्वीकार करने से सभी पापों का नाश होगा - यह भक्तों का विश्वास है। तीर्थ स्वीकरण ''ॐनमो वेङ्कटेशाय'' (अष्टाक्षरीमंत्र) नाम जप से करना उत्तम फल दायक है। यह जप अपने आप में भुक्ति, भक्ति और मुक्ति प्रदायक है तथा पाप निवारक है। अगर नित्यप्रति पवित्र मन से तीर्थ स्वीकार किया जाय तो शांति का मार्ग प्रशस्त होगा एवं मन निश्चल रहेगा।

कहा जाता है कि स्वामिपुष्करिणी जल से प्रक्षालन, वेङ्कटेश्वर भगवान का दर्शन, कटाह तीर्थ का सेवन - इनकी प्राप्ति अत्यंत कठिन है। इनको पाना मुश्किल है। (स्कंद पु. भाग - 2, अ. 1, श्लो. 28 - 35) (वही. श्लोक 34 - 35)।

स्वामि पुष्करिणी स्नानं वाराह श्रीश दर्शनम्।

(श्लो. 34)

कठाह तीर्थ पानं च त्रयं त्रैलोक्य - दुर्लभम्।
बहुना किमिहोक्तेन ब्रह्म - हत्यादि नाशकम्।।

(श्लो. 35)

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'

५. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

हमारी संस्कृति और धर्म से युवाओं का विकास

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया
मोबाइल - 9825113636

*युवा स्यात साधु युवाऽध्यापकः आशिष्ठो द्रढिष्ठो बलिष्ठः।
तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात।।*

(तैत्तरियोपनिषद-२-८)

अर्थ : युवा को साधुचरित, धर्म परायण, अत्यंतशिक्षित, आशावादी, दृढसंकल्पित और बलसंपन्न बनना चाहिए। कोई भी नवयुवक लडके-लड़की ये सभी गुणों से संपन्न होते है, इसके लिए सभी भूमि वित्तपूर्ण बन जाती है। अर्थात् उत्साह से भरपूर कर्तव्य परायण नवयुवकों के लिए कुछ भी नामुमकिन नही रहता, कोई भी कार्य अतिसुलभ हो जाता है।

आज हम ये लेख में धर्म के माध्यम से नवयुवकों के लिए सुंदर एवं महत्वपूर्ण संदेश लेकर आये हैं।

आज के नवयुवकों की संप्राप्त परिस्थितियाँ

सबसे पहले सोचे तो आज के टीनएजर्स, नवयुवकों की हालत देखे तो क्या है? ज्यादातर नवयुवकों सोश्यल मीडिया के शिकार बन गये हैं, सबसे बुरा वक्त ये आया कि कोरोना वैश्विक महाम्मारी के इस समय में छोटे-छोटे बालकों से लेकर सभी को इन्टरनेट के माध्यम से शिक्षा दी जा रही है। इस के कारण टीनएजर्स, नवयुवकों और सभी स्त्रि-पुरुष इन्टरनेट, वोटसेप, फेसबुक, इन्स्टाग्राम जैसे सोश्यल मीडिया के शिकार बन रहे हैं, बन गये हैं। अपनी जो मूल्यवान शक्ति है वो बुरे मार्ग पे लेके अपना मूल्यवान जीवन, अपना कीमती वक्त बर्बाद कर रहे हैं।

हम इस घटना का मूल्यांकन करते हैं तो फलित होता है कि, इस हाइटेक युग में नवयुवकों सिर्फ दिमाग से स्मार्ट हो गये लेकिन शरीर से शक्तिहीन, धर्मविमुख, सही शिक्षा का अभाव, निराशावादी नजर आते हैं, दृढसंकल्प की पूरी तरह से कमी दिखाई देती है। इस परिस्थिति में आज के ये नवयुवकों अपनी मंजिल कैसे पार करेंगे? नवयुवकों को अपनी मंजिल तक पहुँचने में कई सारी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।

ऐसी विपदा में तैत्तरियोपनिषद का जो सुभाषित इस लेख के प्रारंभ में बताया है वो आज के नवयुवकों को सही रास्ता दिखाने वाला साबित होता है।

ये संस्कृत सुभाषित क्या मार्गदर्शन करते हैं?

आज के हाईटेक युग में परिवर्तन जरूरी है, साथ-साथ में नवयुवकों को साधु, गुरु, आचार्य, पंडित परिवार के माता-पिता का सम्मान करना चाहिए और उन सभी के शरण में रहकर सही शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। किसी भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए दृढसंकल्प और दृढमनोबल रखना चाहिए, नित्य आशावादी बनकर जीवन की सही मंजिल की ओर आगे बढ़ना चाहिए। बलवान और शक्तिशाली बनने के लिये ज्यादातर जंकफुड और फास्टफुड से दूर रहकर हमारा पारंपरिक भोजन आदि करना, और हमारी संस्कृति और शास्त्र की आज्ञा का पालन करना चाहिए। ऐसी परिस्थिति बनाकर रहने से हम सभी प्रकार के गुण संपन्न बन सकते हैं, और ऐसी परिस्थितियों में नवयुवकों

के लिए कोई भी कठिनाई अति सरल बन जाती है। हमारे आस-पास एक सकारात्मक ऊर्जा का आवरण बन जाता है। जीवन में निष्फलता कभी भी हमारा पिछा नही कर सकती। इस पोजिटिव एनर्जी (सकारात्मक शक्ति) से पृथ्वी पर सभी जगह पर हमारे लिये वित्त और सोना बरसता है।

इस घटना को दृष्टांत के रूप में समझने के लिए रामायण का हनुमान जी का पात्र सही लगता है।

इस विचार पूर्ती हेतु वीरहनुमान का अनुसंधान

हनुमान जी प्रभु श्रीराम के प्रिय पात्रों में अव्वल नंबर पे है, और सर्वोत्तम दास-भक्त है।

हनुमान जी बाल ब्रह्मचारी, महावीर, अत्यंत बलशाली, अत्यंत बुद्धिमान, अत्यंत शिक्षित, चतुर, विद्वान, सेवा धर्म में अग्रेसर, आचार्य, निर्भय, सत्यवादी, प्रभु के तत्त्व रहस्य गुण और प्रभाव को अच्छी तरह से जानने वाले, महा विरक्त, सिध्ध सदाचारी महात्मा, युद्ध कौशल से भरपूर और अपनी इच्छा से रूप धारण करने वाले ऐसे हनुमान जी गुणसागर है।

रामायण कालिन समय में श्रीहरि विष्णु के साक्षात अवतार पूर्णपुरुषोतम प्रभु श्रीराम कि अविरत कृपा से और आशिर्वाद और अपने बुद्धी चातुर्य से कठिनाइयों को पल में आसानी में बदलकर प्रभु श्रीराम का सीता मैया कि खोज का कार्य संपन्न किया था।

हनुमान जी की सेवा भक्ति और चातुर्य से प्रभु श्रीराम के प्रिय पात्र बन गये, इसी कारण सीता मैया की खोज के लिए हनुमान जी को पसंद किया।

श्रीराम हनुमान जी को कहते हैं कि-

अस्मिन कार्ये प्रमाणं हि त्वमेव कपिसत्तम।
जानामि सत्वं ते सर्व गच्छ पन्थाः शुभस्तव।।

(अध्यात्म रामायण ४-६-२९)

अर्थात प्रभु श्रीराम कहते हैं कि हे कपिश्रेष्ठ इस कार्य के लिए आप जो सर्व समर्थ हो आपके पराक्रम से मैं परिचित हूँ, आपका प्रस्थान और मार्ग मंगलकारी हो।

इस प्रसंग के बारे में हम सोचे तो समस्त लोकों के नाथ, समस्त विश्व के नाथ साक्षात हनुमान जी का गुणगान करते है क्यों?

हनुमान जी का सबसे बड़ा गुण, महापुरुषों का सम्मान, वानर स्वरूप होने के बावजूद भी अत्यंत शिक्षित, संपूर्ण आशावादी, कोई भी कार्य के लिए दृढसंकल्पित, अत्यंत शक्तिशाली और हर-हमेशा प्रभु के आशिर्वाद से संपन्न हनुमान जी का अनिष्ट कौन कर सकता है?

नवयुवकों के लिए तैत्तरियोपनिषद सुभाषित का मूल्यांकन

संस्कृत सुभाषित और हनुमान जी के माध्यम से नवयुवकों को यही संदेश प्राप्त होता है कि, युवा को सोश्यल मीडिया से दूर रहकर अपने में जो मूल्यवान शक्ति होती है यही शक्ति से अपना जीवन सहीमार्ग पे ले जाने का प्रयास और दृढमनोबल रखना चाहिए।

नवयुवकों धर्म परायण बनके, संस्कृति को साथ में लेके पूर्णता शिक्षित बनकर दृढसंकल्पित होकर देव, आचार्य, गुरु और माता-पिता की सेवा के साथ-साथ उनकी आशिर्वाद के बल से जीवन में आगे बढे तो सब कठिन से कठिन कार्य सरलता से पूर्ण हो जाता है, और नवयुवकों की जीवन अप्रतिम ऊँचाईयों को प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी सही शक्ति को गलत रास्ते से हटाकर सही रास्ते पे लाये तो हमारा जीवन अप्रतिम ऊँचाईयों को छू कर धन्य बन सकता है और समाज में पद और प्रतिष्ठित होकर बहुत सम्मान प्राप्त करता है।

नवयुवकों को जय श्रीमन्नारायण!

(मिथ की महिला चरित)

अरुंधती
एक तारिका

- डॉ.के एम भवानी
मोबाइल - 9949380246

अरुंधत्य नसूयचा सावित्री जानकी सती
तेजस्वनी च पांचाली वंदनीय निरंतरम

इस श्लोक के अनुसार महा पतिव्रताओं में अरुंधती को पहला स्थान दिया गया है। अरुंधती ऋषि वशिष्ठ की पत्नी है। आसमान में दिखनेवाले सप्तऋषि मंडल में अपने पति वशिष्ठ के साथ अरुंधती भी विराजमान है। यह सौभाग्य अन्य छः ऋषि पत्नियों को नहीं मिला।

अरुंधती का जन्म वृत्तांत

एक बार विधाता ब्रह्म सृष्टि रचना को करते समय सृष्टि को आगे बढ़ाने में मदद करने के लिए मन्मथ नामक युवक और संध्या नामक युवती का सृजन करते हैं। पहले मन्मथ को पाँच बाण देकर सृष्टि कार्य को आगे बढ़ाने के लिए इन बाणों का प्रयोग करने के लिए कहते है। तब मन्मथ के मन में उसी समय उन बाणों का प्रयोग करने का विचार आता है और वह तुरंत वहाँ उपस्थित ब्रह्मलोक वासियों पर बागों का प्रयोग करता है। काम बाणों के प्रभाव के कारण ब्रह्म के साथ-साथ सभी में संध्या के प्रति मोह भावना जागृत होती है।

संध्या इस विषय को जान लेती है और भगवान शिव की प्रार्थना करती है तो शिव वहाँ प्रत्यक्ष होकर स्थिति को संभाल लेता है। यह सब कुछ ही समय में हो जाता है। तब ब्रह्म के मन में मन्मथ के प्रति क्रोध भावना जागृत होती है। वह क्रोधित होकर मन्मथ को श्राप देते हैं कि भगवान शिव के नेत्रों के द्वारा मन्मथ भस्म हो जाएगा। यह सब कुछ होने के बाद संध्या ब्रह्म से अपनी चाह व्यक्त करती है कि वह शिव की आराधना करती हुई तप करना चाहती है तो ब्रह्म वशिष्ठ को बुलाकर संध्या का मार्गदर्शन करने को कहते हैं। वशिष्ठ के उपदेशानुसार संध्या तप करती है। संध्या के तप से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रत्यक्ष होकर संध्या से वर माँगने को कहते हैं तो संध्या यह वर माँगती है कि-सृष्टि में किसी को वयस्क होने तक मन में काम भावना जागृत नहीं होना है। उसके लोक कल्याण की कामना से बहुत प्रसन्न होकर शिव उनसे और एक वर माँगने को कहते हैं। तो संध्या यह वर माँगती है कि उसके पति के अलावा कोई भी पुरुष बुरी नजर से उसे देखेगा, वह पुरुष तुरंत अपना पुरुषत्व खोकर नपुंसक बनेगा। साथ-साथ वह यह भी कहती है कि अपना यह अद्भुत सुंदर शरीर इतने लोगों के मोह का कारण बन जाने के कारण

वह उस शरीर को दग्ध करना चाहती है। तो शिव उससे कहते हैं कि- मेधातिथि नामक ऋषि कई सालों से तप कर रहा है। संध्या उस ऋषि के आश्रम में जाकर उसके यज्ञकुंड में कूदकर अपना तन छोड़ सकती है लेकिन वह ऐसा तन छोड़ते समय उसके मन में जो कोई भी पुरुष याद आता है अगले जन्म में वही पुरुष उसका पति बनेगा। तब संध्या शिव के आदेशानुसार मेधातिथि ऋषि के आश्रम में जाकर उसके अग्निकुंड में कूद कर भस्म हो जाती है। भस्म होते समय उसके मन में यह भावना जागृत होती है कि ऋषि वशिष्ठ ही उसका पति बने।

संध्या 'अरुंधती' बनी कैसे?

शरीर के दग्ध होने के बाद संध्या उसी अग्निकुंड से पुनर्जन्म लेती है। संस्कृत में 'अरु' शब्द का अर्थ है 'अग्नि'। अग्नि से जन्म लेने के कारण संध्या 'अरुंधती' बन गई। ऋषि मेधातिथि अरुंधती को बेटी के रूप में पाल-पोस कर बडा करता है। एक बार भाग्यवश वशिष्ठ ऋषि मेधातिथि के आश्रम में आ जाता है तो अरुंधती मन में भगवान शिव से यह प्रार्थना करती है कि वह उस ऋषि की पत्नी बने और पतिव्रता बनकर उसका अनुगामी बने। शिव के वर प्रभाव से उन दोनों की शादी हो जाती है।

अरुंधती महा पतिव्रता - एक कहानी

एक बार सप्त ऋषियों की पत्नियाँ यज्ञ करने वाले अपने पतियों के साथ बैठकर अग्नि को हवन का समर्पण कर रही हैं। तो उस समय अग्नि को उनकी सुंदरता पर मोह भावना जागृत होती है लेकिन वह सप्तर्षियों की पत्नियाँ होने के कारण वह कुछ भी नहीं कर सकता है लेकिन उसके मन में जगी तृष्णा नहीं मिटती है। चाह से तप्त अग्नि का शरीर नाश होता रहता है। अग्नि की पत्नी स्वाहा देवी यह जानकर अपने पति की चाह मिटाने के लिए एक-एक दिन एक-एक ऋषि पत्नी का रूप धारण करके अपने पति की तृष्णा को बुझा देती है लेकिन वह कितनी प्रयत्न करने पर भी अरुंधती का रूप धारण नहीं कर पाती है। अरुंधती के पातिव्रत्य का यह एक उदाहरण है।

शादी के अवसर पर अरुंधती का दर्शन

विवाह संस्कृति को प्राथमिकता देने वाले भारतीयों के विवाह में शादी के समय नूतन वधू-वर को अरुंधती का दर्शन कराने का संप्रदाय है। शादी के समय नववधू-वर के साथ अग्नि परिक्रमा से सात कदम (सप्तपदी) चलने के बाद पुरोहित जी उन्हें सप्त ऋषि मंडल में पति के साथ चमकने वाली अरुंधती का दर्शन कराता है। अगर शादी सुबह के समय होता भी है तब भी नववधू से यह पूछा जाता है कि मन में वर-वधू वशिष्ठ और अरुंधती का स्मरण करके उन्हें नमस्कार करना है। ऐसा करके अपने दाँपत्य जीवन शुरू करने से उनकी जिंदगी भी अरुंधती वशिष्ठ जैसा अन्योन्य दाँपत्य जिंदगी बन जाती है। उन दोनों के बीच में एक दूसरे के प्रति सद्भावना सदा बनी रहती है।

श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यांनमः
उमा महेश्वराभ्यां नमः
वाणी हिरण्य गर्भाभ्यांनमः
अरुंधती वशिष्ठाभ्यां नमः

हमारे देश में कोई पूजा या व्रत करते समय त्रिमूर्तियों को उनकी पत्नियों के साथ याद करते हुए पूजा स्थल पर उन्हें स्वागत करने का रिवाज है। उसके साथ-साथ तुरंत आनेवाले नाम अरुंधती और वशिष्ठ ही हैं। ऐसा उन्नत स्थान पाया दंपति सदा हमें आशीष देने की कामना करेंगे।

अरुंधती वशिष्ठाभ्यां नमः

(गतांक से)

मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन. सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

अडियेन मेवि अमर्गिन्ड्र अमुदे इमैयोर अदिपतिये
कोडिय अड़ु पुळ उडैयाने कोल कनिवाय् पेरुमाने
सेडियार विनैगळ् तीर् मरुन्दे तिरुवेंगडत्तु एम् पेरुमाने
नोडियार् पोळुदुम् उन् पादम काण नोलातु आट्रेने।।
(३३३२)

कठिन शब्दार्थ - अमुदे-अमृत, इमैयोर-देवगण, अड़ु पुळ्-गरुड, विनै-बुरे पाप, मरुन्दे-औषध, नोडि-क्षण, पादम- चरण।

भावार्थ - हे विष्णु, तुम्हारे दास मेरे लिए भोगने योग्य अमृत हो तुम। देवगणों के नेता हो तुम। शत्रु को मारने वाले गरुड को अपने झंडे में रखने वाले हो तुम। लाल फल जैसे होंठवाले हो तुम। गंदगी से भरपूर बुराई को याने पापों को दूर करने वाली औषध हो तुम। तिरुवेंकट गिरि में निवास करने वाले हो तुम। तुम्हारे चरणों के दर्शन पाने के लिए मैंने कोई व्रत का पालन तो नहीं किया। फिर भी ऐसा दर्शन पाने के लिए मेरा मन अधिक लालायित है। तुमसे बिछुडकर एक क्षण भी मुझसे सहन नहीं किया जा सकता।

मतलब यह है कि भगवान विष्णु पवित्र अमृत के बराबर हैं। वे पापों को दूर करने वाले औषध हैं। वे सभी देवगणों के नेता हैं। ऐसे भगवान तिरुवेंकट गिरि में निवास करते हैं। उनके चरणों के दर्शन से दूर हटने को मन कभी तैयार नहीं है।

नोलादु आट्रेन् उन् पादम् काण एन्ड्रु नुण् उणर्विन्
नील् आर् कण्डत्त अम्मानुम् निरै नान्मुगनुम् इन्दिरनुम्
चेल् एय् कण्णार् पलर् सूळ विरुम्बुम् तिरुवेंगडत्ताने
मालाय् मयक्की अडियेन् पाल् वन्ताय् पोले वाराताय्।।
(३३३३)

कठिन शब्दार्थ - नील आर् कंठ-भगवान शिव, नान्मुगन-भगवान ब्रह्म, सेल-मछली, माला-कृष्ण, अडियेन-दास।

भावार्थ - हे विष्णु, तुम्हारे पास पहुँचने के लिए मेरे पास कोई साधन तो नहीं है। यह सिर्फ मेरा ही कथन नहीं है। महान ज्ञानी और अपने गले में नीले रंग के जहर को रखने वाला भगवान शिव, परिपूर्ण भगवान ब्रह्म, इंद्र आदि तीनों भी मेरे जैसे अलग-अलग तुम्हारे पास आकर कहते हैं कि हमने कोई साधन नहीं बनाया है। ये सब तुम्हारा दर्शन पाने और तुम्हारी उपासना करने के लिए मछली जैसी आँखों वाली स्त्रियों के साथ आकर तुम्हारे तिरुमल पर नमन करते हैं। ऐसे श्रेष्ठ तिरुवेंकट गिरि में रहने वाले, तुम सब के मन को भाने के लिए भगवान कृष्ण के रूप में आया था। ऐसे ही तुम मेरे निकट आओ। मतलब यह है कि भगवान शिव, भगवान ब्रह्म, इंद्र आदि भी भगवान विष्णु के दर्शन पाने के लिए लालायित हैं। उनके पास भगवान के दर्शन पाने के लिए कोई साधन तो नहीं है। फिर भी वे आकर नमन करते हैं। जिस प्रकार भगवान कृष्ण के रूप में आया था, वैसे ही भक्त को अब आकर दर्शन देना चाहिए।

वन्दाय् पोले वारादाय् वारादाय् पोल् वरुवाने
चन्तामरैक् कण् सेंकनिवाय् नाल्तोळ् अमुदे एनदु उयिरे
चिंतामणिकळ् पगर् अल्लैप् पगल् सेय् तिरुवेंगडत्ताने
अन्तो अडियेन् उन् पादम् अकलगिल्लेन् इरैयुमे।।
(३३३४)

कठिन शब्दार्थ - सेंतामरै-लाल कमल, सेंगनि-लाल फल, नाल् तोळ्-चतुर भुज, उयिरे-प्राण, अल-अंधकार, अलगिल्लेन-नहीं बिछुडूँगा।

भावार्थ - हे भगवान विष्णु, तुम तो आने वाले की तरह होकर न आते हो। न आने वाले की तरह होकर आते हो। लाल कमल की तरह आँखें, लाल फल की तरह होंठ और चार बाहों वाला तुम मेरे लिए अमृत सा हो। तुम मेरे प्राण हो। चिंतामणि नामक रत्न अपने तेज प्रकाश से अंधकार को दूर करके प्रकाश बढाता है। इस तरह के तिरुवेंकट गिरि में निवास करने वाले हो तुम। मैं तुम्हारे चरणों से एक क्षण भी दूर नहीं हटूँगा।

मतलब यह है कि सुन्दर रूप वाला भगवान विष्णु का निवास तिरुवेंकट गिरि है। जिस प्रकार चिंतामणि नाम का रत्न अंधकार को दूर करके प्रकाश को फैलाता है, वैसे ही यह पर्वत भी मन के अज्ञान अंधकार को दूर करके भक्ति ज्ञान के प्रकाश को फैलायेगा।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

पिडियै त्तोडरुम् कळिरेन्न, यानुम् पिरंगियशीर्
अडियै त्तोडरुम्बडि नल्हवेण्डुम्, अरुसमय
च्चेडियै त्तोडरुम् मरुळ्शेरिन्दोर् शिदन्दोड वन्दु इ -
प्पडियै त्तोडरुम्, इरामानुजन् मिक्कपण्डितने ॥६३॥

बाह्यकुदृष्टिदुर्दशनात्मकक्षुद्रगुल्मावगाहनहेतु भूतदुर्विवेकभरितदुर्जनबृन्दसं तर्जनाय भूमाविहावतीर्ण, पण्डितप्रकाण्ड भो भगवद्रामानुज! करिणीमनुसरन् कलभ इव यथाऽहं भवदीयावभिरामौ चरणावेवानुसरेयं तथा नाम दयेथाः॥

बाह्य व कुदृष्टियों के षड्दर्शन रूप क्षुद्रगुल्मों में प्रवेश करनेवाले अविवेकी लोगों को पराजित व पलायमान बनाने के लिए इस भूतल पर अवतीर्ण एवं (जनता का उद्धार करने के लिए) उसके पीछे पडनेवाले हे श्री रामानुज स्वामिन्। अपनी 'फूल बाग में मधु ग्रसन करने के लिए कैसे कीडे भ्रमण करते हैं' वैसे ही मैं भी आपकी कृपा से, सौंदर्यादि शुभगुणविभूषित आपके पादारविंदों का ही अनुसरण करूँ। (विवरण-श्रेष्ठ उपवन में प्रवेश कर आनंद पानेवालों की भांति श्रेष्ठ श्रीवैष्णव मत के अनुयायी बन कर आनंदित होने के बदले में, कई लोग इस कारण से बाह्य व कुदृष्टि मतरूप क्षुद्र कंटकवाले गुल्मों में प्रवेश कर दुःख भोग रहे हैं कि उनका पाप उन्हें ऐसी प्रेरणा दे रहा है। श्री रामानुज स्वामीजी का अवतार होने के बाद, ये सभी पापी जन वाद में पराजित होकर पलायमान हो गये।)

क्रमशः

'गो-महा सम्मेलन' तिरुपति स्थित महति आडिटोरियम में २०२१, अक्तूबर ३०, ३१ को संपन्न किया गया है। इस संदर्भ में ज्योति प्रज्वलन करते हुए ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे. अध्यक्ष, युगतुलसी फौंडेशन के अध्यक्ष, मुख्य सुरक्षा व चौकसी अधिकारी, तिरुपति संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारिणी और ति.ति.दे. अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

दि. ३१-१०-२०२१ को गो-महा सम्मेलन प्रांगण में गोधूली-गोपूजा अनंतर गाय को चारा देते हुए कंचि कामकोटि पीठाधिपति जगद्गुरु श्रीश्रीश्री शंकर विजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी।

ति.ति.देवस्थान और युगतुलसी फौंडेशन के संयुक्त आध्वर्य में तिरुपति स्थित महति आडिटोरियम में २०२१, अक्तूबर ३०, ३१ को गो-महा सम्मेलन कार्यक्रम को अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया गया है। हमारे देश में विविध राज्यों से पधारे हुए पीठाधिपतियों, मठाधिपतियों, स्वामीजी इस कार्यक्रम में भाग लेकर अपना दिव्य अनुग्रह भाषण को दिया है।

गो आधारित कृषि में पके उत्पादों को निरिक्षण करते हुए ति.ति.दे. अध्यक्ष, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी आदि अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया है।

इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, ति.ति.दे. न्यास मंडली के सदस्य, ति.ति.दे. ई.ओ. डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस., ति.ति.दे. तिरुपति संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारियाँ श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., श्री वी.वीरब्रह्मम, आई.ए.एस., सी.वी. अण्ड एस.ओ. श्री गोपीनाथ जेट्टी, आई.पी.एस., युगतुलसी फौंडेशन के अध्यक्ष श्री के.शिवकुमार और ति.ति.दे. अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

गो-महा सम्मेलन प्रांगण में आयोजित गो आधारित उत्पत्तियों का प्रदर्शन शाला को निरिक्षण करते हुए ति.ति.दे. अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.

गो-महा सम्मेलन को पधारे हुए विश्रांत आई.ए.एस., श्री विजयकुमार जी को गो आधारित उत्पत्तियों को देते हुए ति.ति.दे. (तिरुपति) संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री वी.वीरब्रह्मम, आई.ए.एस.,

पंचगव्यों से बनाये गये विविध प्रकार के गो-उत्पत्तियों को निरिक्षण करते हुए ति.ति.दे. अध्यक्ष, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी।

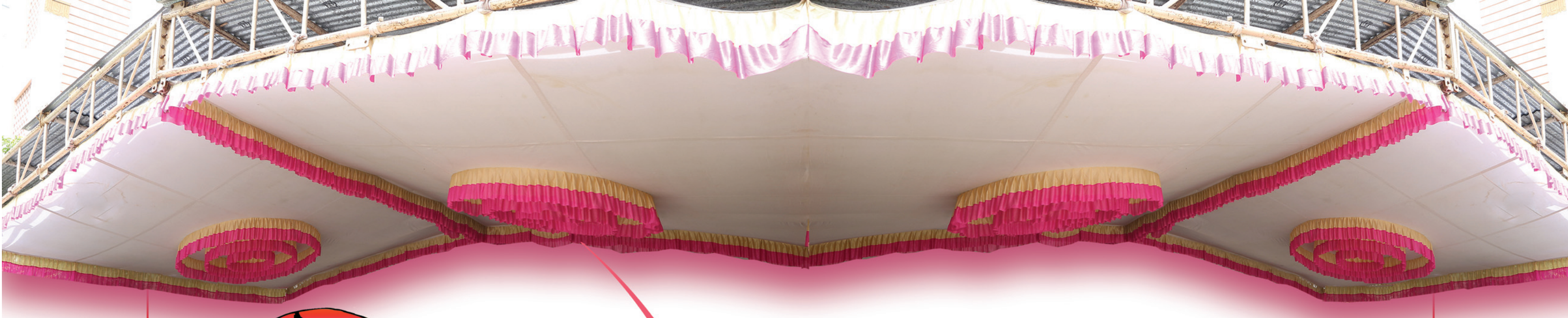

गो-महा सम्मेलन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान और युग तुलसी फौंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में तिरुपति में स्थित ‘महति’ ऑडिटोरियम में 2021, अक्तूबर 30 और 31 तारीखों में भगवान गोविंद के श्रीचरणों के पास अत्यंत वैभवपूर्ण ढंग से गो-महा सम्मेलन कार्यक्रम संपन्न किया गया है। श्री गोधाम पत् मेडा, राजस्थान के सौजन्य से देश के सभी राज्यों से पधारे हुए पीठाधिपतियों, मठाधिपतियों, स्वामीजियों के समक्ष में संपन्न गो-महा सम्मेलन में गो रक्षण, गोमाता का पूजा-कैंकर्य करने से क्या लाभ मिलता है, इस पर विस्तार से विचार किया गया है। उपरोक्त वक्ताओं ने गो-माता से संबंधित सारे विषयों पर अपने-अपने भाषणों के द्वारा प्रकाश डाला है।

पहले दिन गो आधारित कृषि करने वाले किसान और सेव (SAVE) फौंडेशन के व्यवस्थापक श्री विजयराम जी की अध्यक्षता में गो-आधारित कृषि पर भाषण दिए गए। श्री विजयराम जी ने गो आधारित सिंचाई के द्वारा उत्पन्न आहार पदार्थों से श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी के मंदिर में भगवान जी को समर्पित विविध प्रकार के नैवेद्य चढ़ाने के विषय का उल्लेख किया है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के न्यास मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी ने अपने अमृत हस्तों से ज्योति प्रज्वलन करके गो-महा सम्मेलन कार्यक्रम का शुभारंभ किया

है। दोनों तेलुगु राज्यों से गो आधारित कृषि करने वाले किसान लोग भी हजारों की संख्या में भाग लेकर अपने अनुभवों, सूचना-सुझावों से अपने आप को सुसंपन्न किया। गो आधारित प्राकृतिक उत्पादकों के स्टॉल को तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी ने आरंभ किया था। पूर्ण सांप्रदायिक पद्धति में गो आधारित प्राकृतिक विधान में सिंचाई, उत्पादन और गो आधारित पंचगव्य उत्पादकों को वहाँ प्रदर्शित भी किया गया है।

इस कार्यक्रम में अध्यक्षीय भाषण देते हुए ति.ति.दे. न्यास मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी ने गो आधारित सिंचाई के लिए ति.ति.दे. के द्वारा अधिक महत्व देने की बात पर जोर दिया है। साथ ही गो माता को महत्व देने वाले विषय के बारे में बताया। ति.ति.दे के द्वारा हाल ही में आरंभ किए गए

कार्यक्रम (गुडिको गो माता) हरेक मंदिर के लिए एक गाय, गो आधारित नैवेद्य, नवनीत सेवा जैसे कार्यक्रमों का उल्लेख किया है। मात्र गो-आधारित सिंचाई से उत्पन्न आहार पदार्थों से भगवान जी को नैवेद्य चढाने की तरह कृषकों से समझौता करके, मार्केट धाम से भी अधिक पैसा दे कर गो-आधारित आहार पदार्थों को खरीद कर सकते हैं। जिससे किसानों को तथा गो आधारित उत्पादकों को महत्व मिलेगा। इस संदर्भ में उन्होंने यह घोषणा भी की है।

ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस., जी गो-सेवा और संरक्षण के लिए क्या क्या कदम उठाने पडते हैं, उन पर उन्होंने विस्तार से बताया है। मुख्य अतिथि के रूप में गो-महा सम्मेलन में पधारी हुई माता निर्मलानंद योग भारती जी ने गो संरक्षण की आश्वयकता पर जोर दिया और उस में कृषकों की भूमिका के बारे में विस्तार से विवरण दिया। माता जी के नेतृत्व में गो होमम् भी सभा प्रांगण में अत्यंत वैभव पूर्ण ढंग से संपन्न किया गया है। गो-महा सम्मेलन के अवसर पर डॉ.आकेल्ला विभीषण शर्मा जी से लिखित तेलुगु ग्रंथ 'गो-माहात्म्य' का विमोचन भी किया गया है।

सेव (SAVE) फौंडेशन के अध्यक्ष श्री विजय राम जी के साथ साथ अनेक लोग यथा शास्त्रज्ञ, कृषि क्षेत्र के निपुण ने गो

आधारित प्रकृति विधान की सिंचाई से होनेवाले लाभ और सूचना-सुझाओं से सभी को अवगत कराया है।

अक्तूबर 31 वीं तारीख के सायं समय में कंचिकामकोटि पिठाधिपति जगद्गुरु श्री श्री श्री शंकर विजयेंद्र सरस्वती स्वामी जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे हैं। उन्होंने अपने अनुग्रह भाषण में अपनी भारतीय संस्कृति में गो माता की भूमिका के बारे में चित्ताकर्षक रूप में अनेक मार्मिक विचार प्रकट किए हैं। उन्होंने बताया है कि भारतीय संस्कृति में गाय के वैभव की अद्वितीय भूमिका है। तदूपरांत ति.ति.दे. के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी ने कहा कि दोनों तेलुगु राज्यों में स्थित सभी गो शालाएँ ति.ति.दे. श्री वेंकटेश्वर की गो संरक्षण शाला से गठबंधन करने से गायों के संरक्षण के लिए आवश्यक आर्थिक सहायता दी जा सकती है। उन्होने और बताया कि यह गो-महा सम्मेलन कार्यक्रम आरंभ मात्र ही है, आनेवाले दिनों में जिला के स्तर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस की घोषणा भी उन्होंने की है।

ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस., जी ने कहा कि दोनों तेलुगु राज्यों में 600 से अधिक गो-शालाएँ हैं उनके विकास और समृद्धि के लिए कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं। इस की घोषणा उन्होंने की है।

गो आधारित प्राकृतिक कृषि ही विश्व व्यापी आहार की समस्या को दूर कर सकती है, इस पर तिरुपति के स्थानीय विधायक ने बल दिया है।

विश्रांत आई.ए.एस., अधिकारी श्री विजय कुमार जी ने भी इस का समर्थन किया है कि प्राकृतिक कृषि से विश्व व्यापी आहार की समस्या को दूर किया जा सकता है।

गोमाता वैभव को उद्घोषित करनेवाले एक तेलुगु गीत का ति.ति.दे. अध्यक्ष और ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी ने इस संदर्भ में विमोचन किया। इस गीत के निर्देशक - डमरुकं श्रीनिवास रेड्डी जी हैं। और लेखक - श्री जोन्नवित्तुला रामलिंगेश्वर राव है और गायनी - श्रीमती एम.एम.श्रीलेखा जी हैं।

युग तुलसी फौंडेशन के अध्यक्ष और भूतपूर्व ति.ति.दे. न्यास मंडली के सदस्य श्री के.शिव कुमार जी ने बताया है कि गो रक्षण के लिए ति.ति.दे. ने कई

प्रकार के कार्यक्रम किए हैं। गो आधारित नैवेद्य, (गुडिको गोमाता) हरेक मंदिर के लिए एक गाय, नवनीत सेवा जैसे अनेक विशिष्ट सेवा कार्यक्रमों को चलाने वाले ति.ति.दे. का उन्होंने शुभाभिनंदन किया है। इस के साथ ही गाय को राष्ट्रीय जानवर के रूप में घोषित कराने का एक ऐतिहासिक निर्णय भी लिया है। अपने भाषण में उन्होंने इस पर बल दिया है। आनेवाले दिनों में अपनी संस्था की ओर से संक्रांति के बाद देश भर में गो-महा रथयात्रा करने की अपने भविष्य कार्यक्रम के बारे में उन्होंने घोषणा की है।

ति.ति.दे. न्यास मंडली के द्वारा घोषित गोमाता को राष्ट्रीय जानवर के रूप में घोषित कराने की बात का समर्थन करते हुए श्री बाबा राम देव गुरुजी ने केंद्र सरकार से इसे अमल करने की विनति की है। उन्होंने यह भी कहा है कि राज्यों के सभी मुख्यमंत्रियों ने मिलझुल कर ति.ति.दे. द्वारा प्रस्तावित इस विषय को कानून के रूप में तैयार कराने के प्रयास भी करने चाहिए।

भुवनेश्वरी पीठ के पीठाधिपति श्री कमलानंद भारती स्वामीजी, उडिपि पेजावर अधोक्षजा मठ के पीठाधिपति श्री विश्व प्रसन्न तीर्थ महा स्वामीजी, उत्तराखंड श्री गोपाल मणि महाराज, श्री गोधाम महातीर्थ पत् मेडा राजस्थान गौ ऋषि श्री दत्त शरणानंद महाराज आदि ने भी अपने-अपने दिव्य भाषणों से अनुग्रह किया है।

अवधूत दत्त पीठ के उत्तराधिकारी पूज्यश्री दत्त विजयानंद तीर्थ स्वामीजी, कर्णाटक श्री यधुगिरि यतिराज नारायण रामानुज जीयर स्वामीजी, जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्री श्री राघवेश्वर भारती महा स्वामीजी, आं.प्र., चित्तूर में स्थित येर्पेडु व्यासाश्रमम् के श्री परिपूर्णानंदगिरि स्वामीजी ने अपने-अपने दिव्य अनुग्रह भाषण में गोमाता वैभव और गो माहात्म्य के बारे में विस्तार से बताया है।

गोमाता रक्षण के लिए ति.ति.दे. के द्वारा उद्घाटित गति विश्व व्यापी होना है, इस का कंचिकामकोटि पीठाधिपति

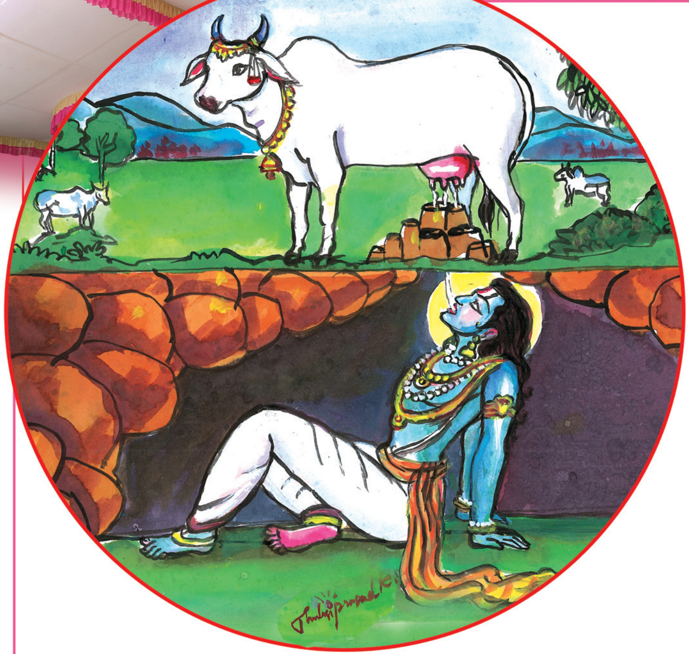

जगद्‌गुरु श्री श्री श्री शंकर विजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी ने अपने दिव्य अनुग्रह भाषण में समर्थन किया है। यह भी बताया है कि गोसंरक्षण निर्णय से देश का विकास और प्रगति संभव है। श्रृंगेरी शारदापीठाधिपति श्री विदुशेखर भारती स्वामीजी ने वीडियो संदेश के द्वारा अपना अनुग्रहण भाषण दिया है।

इस कार्यक्रम के पहले जगद्गुरु श्री श्री श्री शंकर विजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी के द्वारा आरंभित गोधूली-गोपूजा कार्यक्रम विशेष आकर्षण बना है। कपिल गाय और बछडे की स्वामीजी ने विशेष पूजाएँ की हैं। सभा प्रांगण में आयोजित सप्त गो जातियों का प्रदर्शन गो-प्रिय-बंधुओं का नेत्रानंददायक पर्व बना है। उत्तर-दक्षिण भारत देश के संगम की तरह इस गो-महा सम्मेलन में उपस्थित हुए अतिरथ महारथियों का ति.ति.दे. ने भरपूर सम्मान किया है।

सकलदेवता स्वरूप गाय के रक्षण के लिए आगे भविष्य में अनेक कार्यक्रमों को ति.ति.दे. ने उद्घोषित करके इस गो महासम्मेलन को सफल बनाया है।

जय गोमाता!! जय गोविंदा!!

तिरुचानूर देवी श्री पद्मावती

- डॉ.जी.मोहन नायुडु, मोबाइल - 9441480473.

आन्ध्रप्रदेश राज्य के चित्तूर जिले में तिरुपति से थोडी ही दूर पर देवी पद्मावती का दिव्य मंदिर स्थापित है। सुन्दरता से युक्त तिरुपति के पास तिरुचानूर नामक गाँव में सभी भक्तजनों पर कृपा दिखानेवाली माता पद्मावती का भव्य मंदिर है। इसी मंदिर के पास बने तालाब में खिले कमल के फूल से ही माता लक्ष्मी ने पद्मावतीदेवी के रूप में जन्म लिया, जो भगवान विष्णुजी का अवतार भगवान श्री वेंकटेश्वर की पत्नी कही जाती है। इसलिए भक्त उनको लक्ष्मीदेवी का स्वरूप ही मानते हैं। पद्म से उत्पन्न होने का कारण उनका नाम पद्मावती पडा। तिरुचानूर का दूसरा नाम अलमेलुमंगापुरम् है। इस क्षेत्र की देवी अलमेलुमंगम्मा जो पद्मावती नाम से विख्यात है। आजकल अलमेलुमंगम्मा और पद्मावतीजी को एक ही माना जाता है। तिरुचानूर में देवी पद्मावती का मंदिर १७वीं शताब्दी के आसपास निर्मित हुआ। १८वीं शताब्दी के अंत में इस मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ। 'पद्मावती' शब्द का उल्लेख ताल्लपाका चिन्नन्ना के ताम्रपत्र लेखों में मिलता है। ताल्लपाका चिन्नन्ना ने जिस देवी की स्तुति की है, वह श्री वेंकटेश्वर के वक्षस्थल पर रहनेवाली लक्ष्मी ही है।

तिरुचानूर पद्मावतीजी को विभिन्न स्वरूपों में हम देख सकते हैं। इसके संबंध में कई मत प्रचलन में हैं, पुराणों में एक लक्ष्मी वह है जो समुद्र मंथन से जन्मी थी और दूसरी वह है जो भृगु पुत्री थी। भृगु पुत्री को श्रीदेवी भी कहते हैं, उनका विवाह विष्णु भगवान से

हुआ। देवी लक्ष्मी के आठ विशेष रूपों को अष्टलक्ष्मी कहते हैं। देवी लक्ष्मी के आठ रूप ये हैं- आदिलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी। तिरुचानूर पद्मावती देवी के विविध रूप हैं, जैसे- महालक्ष्मी, गजलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, श्रीदेवी, भूदेवी आदि। लक्ष्मी के मुख्य दो रूपों को हम देख सकते हैं- श्रीरूप तथा लक्ष्मी रूप। श्रीरूप में वे कमल पर विराजमान हैं और लक्ष्मी के रूप में वे भगवान विष्णुजी के साथ हैं। वर्तमान में देवी पद्मावती वीरलक्ष्मी के रूप में विद्यमान हैं।

तिरुचानूर पद्मावती के मंदिर में आनेवाले भक्तों का विश्वास है कि माता पद्मावती की शरण में आने से भक्तों के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। यह भी विश्वास है कि भक्तजनों की समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति देवी पद्मावती की कृपा से होती है। इसलिए निम्नांकित मंत्र से देवी पद्मावती की वंदना की जाती है-

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहनी।

सर्व कार्य करनी, मम विकट संकट हरणी।।

मम मनोरथ पूरणी, मम चिंता चूरणी नमो।।

ॐ ॐ पद्मावती नम स्वाहाः।।

तिरुचानूर माता पद्मावतीजी का मंदिर तिरुपति से पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर में देवी पद्मावती कमल पुष्प के ऊपर पद्मासन मुद्रा में बैठी हुई है और दोनों हाथों में कमल के फूल से सुशोभित हैं। इसी मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण, बलराम, सुंदरराज स्वामी और सूर्यनारायण स्वामी की प्रतिमा भी सुशोभित है। मंदिर के ऊपर एक बृहद ध्वज फहराता रहता है, जिसके ऊपर देवी पद्मावती का वाहन एक हाथी की छवि बनी हुई है। हर वर्ष पंचमीतीर्थ के अवसर पर भगवान वेंकटेश्वर देवी पद्मावती के लिए उपहार भेजते हैं, बहुत-से वर्षों से यह परंपरा चली आ रही है।

तिरुचानूर पद्मावती देवी के मंदिर में प्रति वर्ष कार्तिक ब्रह्मोत्सव, वसंतोत्सव, पवित्रोत्सव, पुष्पयागम्, प्लवोत्सव और वरलक्ष्मी व्रत, कुंकुमार्चना बहुत आडंबर से मनाते हैं। प्लवोत्सव के अवसर पर पाँच दिनों में विविध देवताओं की शोभायात्रा निकाली जाती है। पहले दिन कृष्णस्वामी का, दूसरे दिन सुंदरराज स्वामी का उत्सव मनाया जाता है। अंतिम तीन दिन देवी पद्मावती नौका में विहरण करती है।

वसंतोत्सव के अवसर पर पद्मावती स्वर्ण रथ पर आसीन होकर जुलूस में निकलती है और भक्तों को नयनानंद प्रदान करती है। इसी तरह देवी पद्मावती के नवरात्रि महोत्सव भी बहुत वैभव के साथ मनाते हैं। कार्तिक ब्रह्मोत्सव तिरुचानूर का प्रधान उत्सव है। यहाँ कार्तिक शुद्ध पंचमी के दिन तिरुमल से गजवाहन पर लाया गया उपहास माँ पद्मावती को समर्पित कराने की परंपरा है। देवी माँ का दर्शन भाग्य भक्तजनों को मिलता है। इसी सुअवसर पर लाखों भक्तजन पंचमीतीर्थ में स्नान करते हैं। इस तरह नवरात्रि और कार्तिक के अवसर पर देवी पद्मावती पाँचवें दिन रात को गजवाहन पर आरूढ होकर जुलूस में निकलती है। इस दृश्य का वर्णन करना बहुत कठिन है। माँ पद्मावती के गजवाहन को देखकर समस्त भक्त आनंद में तन्मय हो जाते हैं।

श्रीहरि का अनुग्रह

(गतांक से)

तब श्रीहरि ने आत्माराम का अनुग्रह किया। वे कैसे वहाँ पधारे हैं। प्राकारयुक्त बहु मंडप, विविध सत्कल्याण वेदिकाएँ, सोने से बने बडे-बडे गोपुर, सुंदर बडे-बडे सौद, सरस मोतियों से भरे चप्पर, भानुकोटि प्रकाश से प्रकाशवान रत्नजटित सभा-मंडप स्तंभ समेत, गंधर्व नगर की तरह, सिद्धों से सेवित, गीत-नर्तन वाद्यों से भरे एक दिव्य धाम के मध्य में, कुंडलादि रत्न मुकुट, कौस्तुब शोभित, अनेक मुख भूषणों से सुसज्जित, रमणीय कनकांबर वस्त्र लटकते, नील कांति से परिवेष्ठित, हृदय पर व्यूहलक्ष्मी के विराजित होते शत कोटि मन्मथाकार श्री वेंकटेश्वर ने स्वामिपुष्करिणी के तट पर ध्यान करनेवाले आत्माराम भूसुर को दर्शन दिए। स्वामी के दर्शन से विप्र ने प्रसन्न होकर स्वामी का साष्टांग दंड प्रणाम किया। दंड प्रणाम करने के उपरांत विनति करने में असमर्थ होकर गद्गद कंठ से मात्र खडा रहा। ऐसे आत्माराम को देखकर उस पर दया करके बडी करुणा से करुणानिधान जलाधीश श्री वेंकटेश्वर ने इस रूप में कहा। ''तुझे भय क्यों है? व्यूहलक्ष्मी की कृपा दृष्टि तुम पर है। अब के बाद आयु-रारोग्य ऐश्वर्य तुम को प्राप्त होंगे। सत्कर्म करने का विवेक भी तुम को प्राप्त होगा। निष्ठा के साथ जीवन जियो।'' ऐसा कहते श्री वेंकटेश्वर ने ब्राह्मण को अभयदेकर ब्रह्मादि देवताओं से प्रशंसित होते अदृश्य हो गए। तब विप्र आत्माराम थोडा भयकंपित होकर सोच में पड गया कि अभी अभयदान करने वाले श्री वेंकटेश्वर कहाँ गए हैं। सोचने पर लगता है कि यह वास्तव है या सपना? इस रूप में वह हडबडाहट में सोच में पड गया। कुछ समय के बाद सद्गुरु की कृपा से समझ लिया कि यह सत्य है। फिर पर्वत से उतर कर अपने शहर जाकर संपदाएँ प्राप्त करके अनेक दान पुण्य करने लगा।

सूत ने यह कथा शौनकादि मुनियों को सुनाया। ब्रह्मांड पुराण सुनानेवाले सूत ने शौनकादि मुनियों से यह भी कहा कि ''इस कथा को पूर्व में मुझे वाल्मीकि ने सुनाया था हे संयमी मुनिगण! वही मैंने आप लोगों को सुनाया'' आत्माराम की कथा के बारे में सुनने के बाद शौनकादि मुनियों ने ''वराह पर्वत के माहात्म्य के बारे में आप से सुन कर हमें बहुत आनंद हुआ। अब इस वैकुंठ पर्वत पर विराजित अन्य जल स्रोतों और जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर के बारे में हमें विस्तार से बताइए।'' ऐसा मुनियों ने आशा से सूत से कहा। आगे सूत ने उन से कहा।

सप्तदश तीर्थ

''हे धीरात्मा! सुना है कि उस पर्वत पर लगभग सत्रह पुण्य तीर्थ है। उन के बारे में विस्तार से सुनने की इच्छा है। कृपया हमें सुनाइए।'' वेंकटाचल पर्वत के माहात्म्य को और विस्तार देते हुए उस पर स्थित विविध तीर्थों के बारे में सूत ने शौनकादि मुनियों को इस रूप में सुनाया। ''हे महात्मा! उन तीर्थों के माहात्म्य के बारे में बताना बहुत कठिन है। फिर भी बुजुर्गों ने जो कुछ मुझे बताया

जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर

- आचार्य आई एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

है उसी रीति में मैं आप को बताऊंगा। कृपया सुनिए।'' कहते सूत ने उस बादरायण का स्मरण करके उन तीर्थों के बारे में बताना शुरू किया। जैसे आप ने आत्माराम की कथा कपिलतीर्थ के बारे में उल्लेख सुना है। उस की पूरी कथा सुनिए।

कपिलतीर्थ

वह एक पाताल तीर्थ है। कपिल नामक एक मुनि ने सांख्य-योगाभ्यास करते अपनी सारी इंद्रियों को वश में रखकर अति उत्साह से वहाँ एक शिव लिंग की प्रतिष्ठा करके शिव की अर्चना की है। तब शिव लिंग महादीर्घ रूप में महादीप्त हुआ। तब सुर और जनों से पूजा प्राप्त करने के उद्धेश्य से पाताल से कपिल लिंग धरती पर आ गया। तब सगरनंदनों को सद्गति देकर वहाँ की भोगवती महोन्नत रूप में लिंगमूर्ति के साथ ही धरती पर पहुँच गयी। वही भोगवती कपिलतीर्थ बन गयी। वह सदा प्रवाहित होते हुए मनुष्यों के पापों का निवारण करने लगी। इस तीर्थ की महिमा को जान कर देवतागण और मनुष्य बडी श्रद्धा के साथ उस तीर्थ में पवित्र स्नान करके उस शिवलिंग की पूजा करने लगे हैं।

चक्रतीर्थ और विश्वक्सेन तीर्थ

कपिलतीर्थ के ऊपर चक्र तीर्थ प्रवाहित होता है। पूर्व में अहल्या के साथ देवपति इंद्र के द्वारा किए गए पाप को दूर करने के लिए इंद्र ने इसी चक्रतीर्थ में स्नान किया था। चक्रतीर्थ के ऊपर विश्वक्सेन तीर्थ प्रवाहित होता है। पूर्व में यहाँ पर वरुण के पुत्र विश्वक्सेन ने तप किया था। तब हरि उस के तप से प्रसन्न होकर वहाँ पर आये। तब शंख, चक्र युगल और परिवार के साथ हरि ने विश्वक्सेन को दर्शन दिए। उस के स्मरण में इस का नाम विश्वक्सेन तीर्थ पड गया।

पंचायुध तीर्थ और अनल तीर्थ

पंचायुध तीर्थ संचित तीर्थ हैं। यह चक्रतीर्थ के ऊपर स्थित है। उनके ऊपर अनल तीर्थ प्रवाहित होता दिखाई देता है।

ब्रह्म तीर्थ और सप्तर्षि तीर्थ

अनल तीर्थ के ऊपर ब्रह्मतीर्थ है। महापाप करनेवालों को इस तीर्थ में नहाने से पुण्य प्राप्त होता है। ब्रह्म तीर्थ के ऊपर सप्त ऋषियों के नाम से सप्तर्षि तीर्थ दिखाई पडते हैं। ये एक से बढ कर एक पुण्य प्रदान करनेवाले हैं। दशाधिक फल भी ये तीर्थ देते हैं। इन के बारे में ब्रह्मादि ही बता नहीं सकते हैं। ऐसे में मैं कैसे बता सकूँगा। यहाँ पर एक और विशेषता का उल्लेख करना चाहिए। पूर्व में धरती पर रहनेवाले एक राजा इन सारे तीर्थों के दर्शन करने के लिए निकले। रास्ते में वह सो गया। तब पुरुषोत्तम ने उस के सपने में दिखाई दिया। सपने में पुरुषोत्तम ने इस रूप में कहा। ''हे पुरुषोत्तम! दूर रहनेवाले इन तीर्थों की खोज करते तुम क्यों निकले हो? यही देखो इस पुष्करिणी के पास ही पवित्र सत्रह तीर्थ हैं। इन में क्रम से स्नान करो। तब क्रम से तुम को सारी सिद्धियाँ प्राप्त होंगी। इस में तुम कोई संदेह मत करो।' यह सुन कर उस राजा ने संतोष से नींद से जाग कर ऐसा ही किया। मैं रमाधीश के द्वारा स्वप्न में बताये मार्ग से पुष्करादि पहुँच कर वहाँ के तीर्थों में स्नान करके विशेष सिद्धियाँ प्राप्त करूँगा। ऐसा सोच कर वह पहले कपिलतीर्थ से आरंभ करके सप्तादश तीर्थों में क्रम से स्नान करके सकल सिद्धियों को प्राप्त किया। ऐसा सूत ने बताया।

इस ब्रह्मांड में साढे तीन करोड तीर्थ हैं। त्रिभुवनों के इन तीर्थों में अखिल मुख्य और अनेक तीर्थ इस श्री वेंकटाद्री पर हैं। इसलिए तीर्थों के लिए यह वेंकटाद्री प्रसिद्ध बन गयी है। वेंकटाद्री का स्वामी श्री वेंकटेश्वर इसलिए जलाधिदेव के रूप में विख्यात हुए।

ऐसी वेंकटाद्री की परिक्रमा करने से भू परिक्रमा करने से प्राप्त होनेवाला पुण्य समान पुण्य प्राप्त होता है। इससे बढ कर एक और विशेषता यह है कि वेंकटाद्री शिखर दर्शन से समस्त तीर्थों के फल को प्राप्त कर सकते हैं। इस के अतिरिक्त युधिष्ठिर आदि पांडु पुत्र वनवास करते समय उन से श्रीकृष्ण ने ऐसा कहा था। सूत ने आगे शौनकादि मुनियों का बताया।

क्रमशः

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

११३

श्रीमते रामानुजाय नमः

अर्जुनजी अपने मन में सोच रहे हैं और मन हीं मन कह रहे हैं कि साधन भक्तियोग कहने सुनने में तो अच्छा लगता है परन्तु भगवान की तरफ से इसमें जो अन्तिम स्मृति की शर्त है सो हम काल, कर्म, गुण, स्वभाव आदि के पराधीन चेतनों के लिये बड़ी ही मुश्किल की बात है। मोह माया के अत्यन्त पराधीन यह चेतन ''मैं अन्त में भगवान का स्मरण ही करके मरूँगा'' इस बात की कैसे प्रतिज्ञा कर सकता है। न जाने किस समय कौन से रोग से होश में या बेहोश में यह प्राण निकलेगा। फिर अन्तिम स्मृति की शर्त इस पराधीन जीव के लिये पालन करना तो महामुश्किल है। मरते समय में प्राण पीड़ा रहेगी, मृत्यु का भय रहेंगा। हरेक प्रकार से हृदय में घबड़ाहट न्यारी ही रहेगी। जन्म भर का अनेक प्रकार से पाला-पोषा हुआ शरीर आज श्मशान भूमि पर बुरी तरह से जला दिया जायगा। इस बात की भयंकर चिन्ता मरते समय बनी ही रहेगी। सारे कुटुम्ब के लोग उस वक्त दुखित रहते हैं। बहुत से अधीर होकर रोते रहते हैं। बहुत से मरते हुए बन्धु से चिल्ला चिल्लाकर उस वक्त अधीर होकर कहा करते हैं कि तुम हम लोगों को छोड़ कर चले जाते हो, हम लोगों की क्या दशा होगी। एक तो खुद ही वह चेतन प्राण पीड़ा से व्यग्र रहता है फिर उस कुटुम्बियों की चिल्लाहट सुनकर हृदय में दुपट घबड़ाहट छा जाती है। एक शरीर छूटने का मोह, दूसरे कुटुम्बों के छूटने का मोह। प्राण से बढ़कर के जिन स्त्री पुत्रादिकों पालन किया वे सब आज परवश छूट रहे हैं। उन लोगों के छूटने का व्यामोह उसको न्यारा ही सता रहा है। जन्मभर की कमाई हुई सारी सम्पत्ति आज हाथ से परवश छूट रही है। इस बात की बेचयनी और बेहोशी बढ़ती जा रही है। इस प्रकार से परवश मरने वाला चेतन किस प्रकार से प्रतिज्ञा करके कह सकता है कि मैं मरते समय भगवान का ही ध्यान स्मरण करता हुआ शरीर छोड़ूँगा। श्री अर्जुनजी मन में सोचते हुए कह रहे हैं कि साधनस्वरूप भक्तियोग के बल से भी मुक्ति मिलना महा असम्भव है। तीनों योगों के बल से तो हमें विश्वास नहीं है कि यह परवश जीव कभी मुक्ति ले सके। क्या करें क्या न करें इसमें दिमाग चक्कर खाता है। यदि करने की हिम्मत करूँ तो तीनों योगों में इतनी शर्ते हैं कि किसी प्रकार से इस परवश जीव से उनका पालन परिपूर्ण रीति से हो ही नहीं सकता। यदि न करें तो भी नहीं बनता। खास भगवान ने उपदेश किया है इसलिए त्यागना भी ठीक नहीं स्वतन्त्रतापूर्वक तीनों योगों के करने में किसी तरह भी सिद्ध होने की सम्भावना नहीं दीखती और अचिद्वत्परतन्त्र रूप आत्मस्वरूप से भी विरुद्ध है।

इस प्रकार संशयात्मक अनेक बातों को विचार करते हुए अत्यन्त शोकातप्त अर्जुन को देखकर कृपासागर भगवान बोले कि अर्जुन! साधनस्वरूप इन तीनों योगों की कठिनाइयों को श्रवण करके और अपने को उसके करने में असमर्थ जानकर और अत्यन्त परतन्त्र आत्मस्वरूप के विरुद्ध इन साधनों को समझकर क्या करूँ, क्या न करूँ इस विचार में

जो तुम व्यग्र हो रहे तो यह ठीक ही है। तुम्हारा सोचना यथार्थ है। वास्तव में ये तीनों योग बहुत ही कठिन हैं। मैं भी जानता था कि अत्यन्त परतन्त्र इस चेतन से वह बनना असम्भव ही है और वास्तव में परतन्त्र स्वरूप के विरुद्ध भी है। परन्तु इन तीनों का स्वरूप और कठिनाइयाँ यदि भलीभांति हम नहीं समझाते तो शायद तुम्हारे मन में यह रह जाता कि क्या कठिन उपाय हमसे नहीं हो सकते थे कि भगवान ने हमको इतना सुलभ उपाय बताया? तुम में इस बात का भ्रम न आजावे इसलिए मैंने पहिले कठिन उपायों का ही उपदेश किया। अब तुम इन उपायों की कठिनाइयों को खूब समझ गये और इनके चक्रव्यूह से खूब घबड़ा भी गये हो। इसलिए सब के लायक तुम्हारे परतन्त्र स्वरूप के अनुरूप इसी जन्म के अन्त में परमपद में पहुँचा देने वाला उत्यन्त सरल अचूक उपाय बताता हूँ सावधान होकर सुनो :-

''सर्वगुह्यतमं भूयः श्रुणु में परमं बचः।
इष्टोऽसि में दृढ़मिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।।

हे अर्जुन! अब आगे जो उपाय कह रहा हूँ इससे अवश्य ही तुम्हारा हित होगा। यह अचूक उपाय है। अकिञ्चन और अनन्य गति जो अधिकारी हैं उनको मैं अपना इष्ट मानता हूँ जो उपायान्तर रक्षकान्तर त्याग पूर्वक हमको ही उपायत्व करके स्वीकार करते हैं और मेरे ही ऊपर अपने रक्षण का भार छोड़ देते हैं, वे ही अकिञ्चन और अनन्यगति अधिकारी कहे जाते हैं। इससे तुम हमारा इष्ट हो। जितना भी पीछे मैं तुम्हें उपदेश दे आया हूँ उन सबों से यह उत्कृष्ट वचन है। अभी तक जो ज्ञान कह आये वह गुह्य और गुह्यतर था। अब जो बताता हूँ यह सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है। शास्त्रों में कहीं भी जो ज्ञान आये हैं उन सब से यह गुह्यतम विपय है। जो गोप्य चीज है उसे गुह्य कहते हैं। जो कुछ ज्यादा गोप्य है उसे गुह्यतर कहते हैं और जो बहुत गोप्य है उसे गुह्यतम कहते हैं। और जिस ज्ञान को अत्यन्त परीक्षा करके महान् मुमुक्षु अत्यन्त परीक्षित करोड़ों में अति श्रद्धावान एक किसी अधिकारी को ही दे सकते हैं। इसको सर्वगुह्यतम ज्ञान कहते हैं। आज तुम्हें वही ज्ञान मैं बता रहा हूँ।

जिस शरणागति को तीन श्लोकों में सूक्ष्मरूप से बता आया हूँ उसीको विस्तार से कह रहा हूँ। साधनस्वरूप कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग की कठिनाइयों को देखकर और उसके करने में अपने को असमर्थ जानकर जो तुम सोच में पड़ रहे हो उसको त्याग दो और जो तुम्हारे स्वरूप के अनुरूप है जिसको तुम आसानी के साथ कर सकते हो ऐसा उपाय बताता हूँ उसको तुम करो।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

इसका अर्थ छन्द में -

धर्मों में साधन भाव तजि कैंकर्य की करि भावना।
मुझको ही साधन मानिरहु यदि परमपद है पावना।।
मत्प्राप्ति प्रतिबन्धक अघों से अवशि तोहि छुड़ाउँगा।
मति शोचु निश्चय परमपदमें भी तुम्हें पहुँचाउँगा।।

अभी तक कर्म, ज्ञान, भक्ति रूप जिन धर्मों को तुम्हें मोक्ष का उपाय करके मैंने बताया था उन धर्मों में से उपाय भावना हटाकर कैंकर्य भावना से किया करो और संसार बन्धन से छूटकर परमपद जाने के लिए एक मेरी शरणागति का अवलम्ब पकड़ो। शरणागति के अवलम्ब पकड़ने का यह भाव भया कि एक हमको ही उपायत्व करके स्वीकार कर लो। याने इतरावलम्ब त्याग पूर्वक एक मेरी निर्हेतुक कृपा के ऊपर अपनी परिस्थिति कर लो। इस प्रकार कैंकर्य भावना से धर्मों को करते हुए इतरावलम्ब त्यागपूर्वक आत्मोज्जीवन का सर्व स्वभार यदि हमारे ऊपर छोड़ कर रखोगे तो हमारी प्राप्ति में विघ्न करने वाले जितने तुम्हारे पाप हैं उन सभी पापों से मैं तुम्हें छूड़ा दूंगा और तुम्हारा अभीष्ट जो मेरी प्राप्ति है उसे भी अवश्य कहा दूँगा। अब तुम्हें बिल्कुल सोच करने की जरूरत नहीं है।

क्रमशः

श्री प्रपन्नामृतम्

(२७वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

(गतांक से)

यतीन्द्र श्रीरामानुजाचार्य का दरिद्र ब्राह्मण श्रीबरदाचार्य के यहाँ आगमन

शिष्यों को सहस्रगीति का उपदेश करते हुये एक दिन श्रीरामानुजाचार्य एक गाथा का अर्थ करते हुए बोले कि-आजीवन भगवान वेंकटेश की सेवा करनी चाहिये। इसके बाद श्रीरामानुजाचार्य बोले-हमारी ओर से श्रीवेंकटाचल पर भगवान वेंकटेश की भक्ति भरी भावना से तुलसी और पुष्पों का उद्यान लगाकर उनकी सेवा करने वाला कोई अर्चक है क्या? उनकी वाणी सुनकर भी अनन्ताचार्य बोले-आपकी आज्ञा, मैं यह कैंकर्य कर सकता हूँ। तदनन्तर यतिराजश्री की बन्दनाकर वेंकटाचल पर उद्यान लगाकर वहाँ तुलसी और पुष्प की माला से भगवान वेंकटेश की सेवा करने लगे, उनका यह कैंकर्य सुनकर भगवान रामानुजाचार्यजी बहुत प्रसन्न हुए और श्रीशठकोपाचार्य रचित सूक्तियों का अनुसंधान करके भगवान वेंकटेश का दर्शन करके प्रार्थना की। तदनन्तर महित क्षेत्र में जाकर वहाँ भगवान विष्णु के दिव्य विग्रह का दर्शन करके रास्ते में भगवान पुण्डरीकाक्ष का दर्शन कर उनका नाम संकीर्तन करते हुये उत्तर दिशा की ओर बढ़े। रास्ते में पड़े हुये दिव्य देशों का दर्शन करते हुए वे देहली नगर में भगवान त्रिविक्रम का दर्शन किये। इसके बाद शैवों से भरे चित्रकूट में आकर वहाँ ठहरना उचित न समझकर वे सहस्र नामक ग्राम में आये। उस ग्राम में यतिराज के वरदाचार्य तथा यज्ञेश नामक दो शिष्य रहते थे। यतिराज ने वहाँ जाने से पहले अपने दो शिष्यों को आगे भेजा। जिन शिष्यों ने यतिराज के आगमन का समाचार उन दोनों को सुनाया। उन दोनों में यज्ञेश धनी व्यक्ति था। उसने जब श्रीरामानुजाचार्य के आगमन का समाचार सुना तो अत्यन्त प्रसन्न होकर उन श्रीवैष्णवों का सम्मान पूजन किये बिना ही गुरुदेव के स्वागत की तैयारी करने लगा। यज्ञेश का यह समाचार सुनकर कि हमारे यहाँ से गये हुये श्रीवैष्णवों का किसी प्रकार भी सम्मान-सत्कार नहीं किया, वहाँ न जाकर यतिराज ने अपने शिष्यों के साथ उस गाँव के दरिद्र ब्राह्मण वरदाचार्य के घर पदार्पण किया। उस समय वह ब्राह्मणदेव भिक्षार्थ कहीं बाहर गये हुये थे तथा उनकी पत्नी लक्ष्मी घर में फटे कपड़े को किसी तरह लपेटकर बैठी थी, जिसके कारण वह वैष्णवों एवं आचार्य के सामने आने में अक्षम थी। किन्तु उसने यह सोचकर कि यदि मैं नहीं जाती हूँ तो गुरुदेव असत्कृत रह जायेंगे, उसने हाथ की ताली बजायी। उसकी हस्त-ध्वनि सुनकर यतिराज ने अपने एक वस्त्र को उसके घर के भीतर फेंक दिया। इस वस्त्र को पहनकर उस सती-साध्वी ने आकर पहले तो गुरु को साष्टांग प्रणिपात करके उनका उचित सत्कार किया। इसके बाद तदीयाराधन की चिन्ता उसको लगी। किन्तु उस समय तो उसके घर में कुछ भी नहीं था। अन्त में उसने सोचा कि शरीर बेचकर भी गुरुदेव की सेवा करनी चाहिये। अतः वह अपने ग्राम के ही उस महाजन के घर गयी जो उसके साथ में अनैतिक व्यवहार करने के लिये लालायित रहता था। वह उस महाजन के घर जाकर हँसती हुई बोली कि-आज मेरे गुरुदेव आये हैं, अतः उनके तदीयाराधन के लिए आप उचित मात्रा में आवश्यक सामान भिजवा दें और फिर आप अपने मनोनुकूल व्यवहार मुझसे करेंगे। अपनी मनोभिलाषा की अचानक सिद्धि सुनकर उस महाजन ने विपुल मात्रा में भोजन की सभी सामग्रियाँ भिजवा दी। इसके बाद उस सती साध्वी को आयी हुई देखकर श्रीरामानुजाचार्य ने भगवान का भोग लगाकर उसे भी प्रसाद दिया।

।।श्रीप्रपन्नामृत का २७वाँ अध्याय समाप्त हुआ।। क्रमशः

भारत में कलियुग का प्रत्यक्ष दैव, आर्तत्राण का रक्षक तिरुमल तिरुपति श्री वेंकटेश्वर स्वामी से जुड़े अनेक मंदिर दिखाई पड़ते हैं। उनमें से एक है दक्षिण बेंगलूरु के वसंतपुर क्षेत्र में स्थित वसंत वल्लभराया स्वामी मंदिर, जो अत्यंत प्राचीन है। इस मंदिर का पूरा नाम है- 'भून्नीला वसंतनायकी समेत वसंत वल्लभराया स्वामी देवस्थान'। पहले वसंत वल्लभराया स्वामी मंदिर 'आणि मांडव्य मंदिर' कहा जाता था। पर आज यह 'वसंत वल्लभराया देवस्थान' ही कहा जाता हैं। मंदिर १२०० वर्षों से भी पुराना है। इस मंदिर का पुराण प्राशस्त्य और चारित्रिक गौरव दोनों भी घना है।

मंदिर का पुराण प्राशस्त्य तथा इतिहास

स्थल पुराण के अनुसार आज जो बेंगलूरु नगर है, वह प्राचीन काल में 'कल्याणपुरी' कहा जाता था। पहले यहाँ घना जंगल था। यह सुनहरा अरण्य, अनेक ऋषि-मुनियों से तपस्या किया गया तपोभूमि है। वसंत वल्लभराया मूर्ति की स्थापना मांडव्य महामुनी से की गयी थी। मांडव्य महामुनी हिमालय के बद्रिकाश्रम में रहते थे और उन्होंने दक्षिण भारत के भगवान विष्णु के पवित्र धामों के दर्शन करने का निर्णय लिया। इसी दौरान उन्होंने कर्नाटक के मेल्कोटे चेलुव नारायण स्वामी का दर्शन प्राप्त किया। कुछ दिनों तक वहीं रहकर भगवान की सेवा की। वहाँ भगवान बालाजी ने उनको दिव्य दर्शन देकर कहा कि ''मैं आजकल कल्याणपुरी में रहता हूँ और वहाँ स्वयंभू मूर्ति हैं; उसकी प्रतिष्ठापना करो; ताकि आश्रित भक्तों की मनोकामना पूर्ण हो सके।'' भगवान के आदेशानुसार तुरंत मांडव्य मुनी ने इस क्षेत्र में आकर वसंत वल्लभराया की मूर्ति को देखकर अपना भाग्य समझ कर बड़ी प्रसन्नता से अत्यंत निष्ठा और विधि-विधान के साथ इसी स्थान पर स्वयंभू मूर्ति की प्रतिष्ठा की। वे हर रोज नियमित रूप से पूजादि करके 'गुप्तगिरि' नामक गुफा में तपस्या करते थे। मांडव्य मुनी इस क्षेत्र में रहते समय, धरती पर भगवान श्रीनिवास का कल्याण तिरुपति के नजदीक नारायणवन में संपन्न हुआ। इसके बारे में जानकर, श्रीनिवास कल्याण को नहीं देखने से मांडव्य महामुनि को बहुत निराशा हुई। मांडव्य मुनी के दुख को जानते हुए भगवान श्रीनिवास विवाह के दूसरे दिन भूदेवी, नीलादेवी और वसंतनायकी के साथ उनके सामने प्रकट हुए। हिंदू संप्रदाय

हमारे मंदिर

वसंत वल्लभराया स्वामी मंदिर, वसंतपुरा

- डॉ.एच.एन.गौरीराव,
मोबाइल - ९७४२५८२०००.

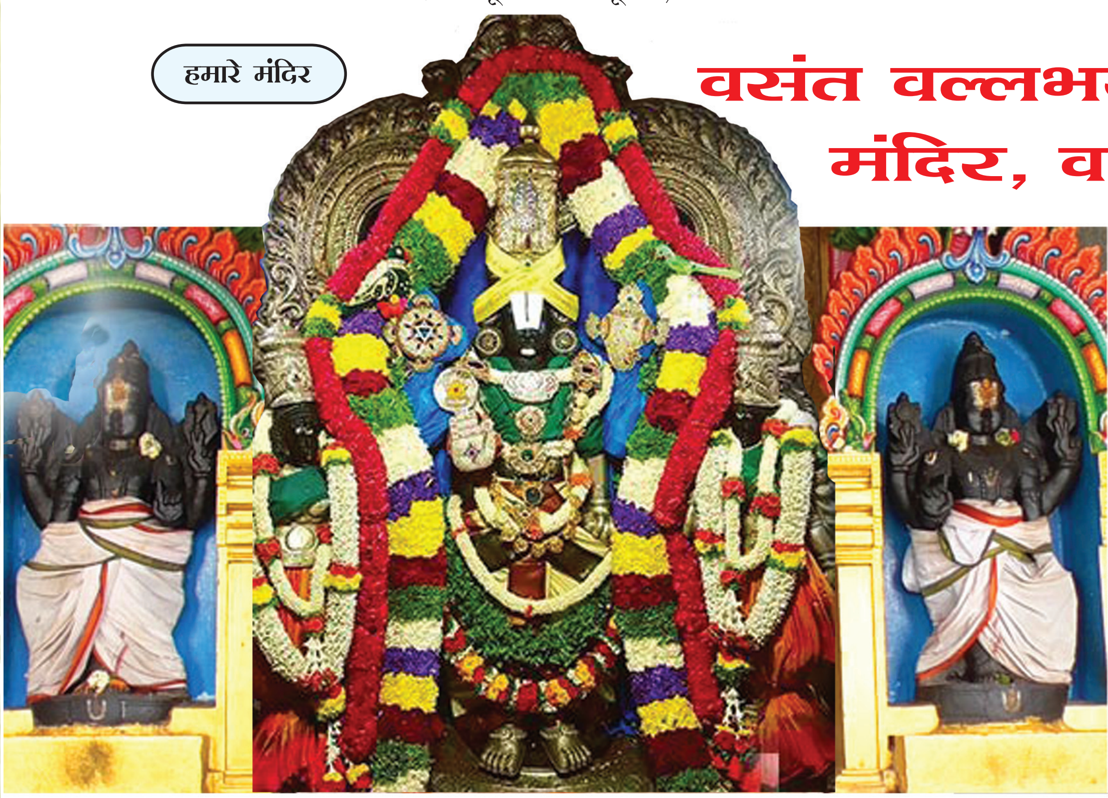

के अनुसार विवाह के दूसरे दिन नव वर-वधू पानी में वसंत स्नान करते है। इस स्थान की भूलोक स्वर्ग समान अद्भुत रमणीय प्रकृति को देखकर पुलकित भगवान बालाजी और उनकी पत्नियों ने यहाँ के पाँच तीर्थो (शंकरतीर्थ, चक्रतीर्थ, प्लवतीर्थ, देवतीर्थ और वसंततीर्थ) में वसंत स्नान किया। इससे ये पांच तीर्थ पवित्र बन गए। 'वसंत' का अर्थ 'वसंत स्नान करना' है। 'वल्लभ' का अर्थ 'पति' है और 'राया' का अर्थ है 'सब का अधिपति'। इसलिए यहाँ वेंकटेश्वरस्वामी का नाम हुआ, 'वसंत वल्लभराया' और इस मंदिर के कारण इस गाँव का नाम पड़ा वसंतपुरा। मांडव्य महामुनी के आग्रह पर वल्लभराया स्वामी इस क्षेत्र में रह कर तिरुपति के समान भक्तों को आशीर्वाद देने लगें।

मंदिर के परिसर में प्राप्त शिलालेखों से पता चलता है कि मांडव्य मुनी से स्वयंभू श्रीनिवास स्वामी मूर्ति की प्रतिष्ठापन के अनेक वर्षों के बाद इस मंदिर के महत्व को जानकर इसका निर्माण १२वीं सदी में (१००४-१११६ ई.) चोल राजाओं से किया गया। छत्रपति शिवाजी ने यहाँ के जंगलों में सेना शिबिरों में रहते समय भवानी शंकर मंदिर का निर्माण किया था। शिवाजी की कुलदेवता तुलजा भवानी थी। उसी के नाम पर उन्होंने भवानी शंकर मंदिर बनवाया। यह मंदिर कर्नाटक सरकार के मुजराई विभाग के अंतर्गत आता है।

मंदिर का बनावट

वसंत वल्लभराया मंदिर एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित है। इम मंदिर का कोई बुनियाद नहीं है। यह मंदिर पहाड़ी पर पत्थरों से निर्मित किया गया है। वल्लभराया मंदिर प्राचीन मंदिर वास्तु शास्त्र का नमूना है, जिसमें वास्तु के सभी आयामों के अनुसार निर्मित है। इसी कारण से बहुत प्राचीन होने पर भी यह मंदिर अच्छी स्थिति में है। यह मंदिर चोल राजाओं द्वारा द्राविड़ विजयनगर वास्तु शैली के अनुसार निर्मित है। मंदिर के अंदर जाने के लिए तीन प्रवेश द्वार है। इस मंदिर में गोपुरम, गर्भगृह, अंतराल, नवरंग मंडप, पाताल मंडप और मुख मंडप है। मंदिर का गर्भगृह बहुत बड़ा न होकर छोटा सा है। गर्भगृह में मांडव्य महामुनी से प्रतिष्ठित छोटी सी मूर्ति है जो स्वयंभू है, उसके पीछे, श्रीदेवी और भूदेवी समेत वसंत वल्लभराया स्वामी की बृहत प्रतिमा है। पद्मावती माता के लिए मंदिर के अंदर ही प्रत्येक मंदिर हैं; माता यहाँ वसंत नायकी नाम से जानी जाती है। नवरंग मंडप में एक दीवार पर चक्रत्ताल्वार की मूर्ति और लोहे का भू-वराहस्वामी की मूर्ति है। भगवान वेंकटाचलपति के सामने गरुडाल्वार को स्थापित किया गया है। इस मंदिर के आगे दीवार पर, जहाँ से मंदिर में प्रवेश किया जाता है, भगवान विष्णु के विविध रूपों के सुंदर शिल्प है। मंदिरों के चारों ओर दीवारों पर हाथियों और लताओं की नक्काशी अति आकर्षक रूप से दिखायी गयी है। चमकदार लोहे के मैसूर रियासत के राजचिह्न के रूप में गंडबेरुंड का प्रतीक एक दीवार पर है और वृक्ष के नीचे तपस्या करने की मुद्रा में मांडव्य महामुनी की मूर्ति दिखाई देती है। इसके नजदीक दीवार के एक छोटे मंडप में विष्णुपद है। गर्भगृह के चारोंओर जो प्रदक्षिणा पथ है, उसके दीवारों पर भगवान श्रीनिवास और अन्य देवताओं का सुंदर रंगीन चित्रण किया गया है। मंदिर के प्रवेश द्वार पहुँचने के लिए २ या ३ सीढ़ियों को चढ़ना है। वहाँ दो हाथियों के मुख के शिल्प हैं जो मनमोहक है। बच्चे उन पर बैठना पसंद करते हैं। सीढ़ियों पर चढ़ते समय महाविष्णु और उनके उप देवताएँ, हनुमान और गरुड़ मूर्तियों का दर्शन होता है। प्रवेश द्वार के दोनों ओर जय और विजय की मूर्तियाँ है। मंदिर सामने गरुड़गंब, ध्वजस्तंभ और बलिपीठ है। मंदिर के ठीक सामने ध्वजस्तंभ है, जो पीतल से लेपित है। इस स्तंभ के शिखर पर तीन क्षितिज सलाखे सीधे मंदिर की ओर इशारा करते हुए दिखाई देते है। ये तीन सलाके, ब्रह्म, विष्णु और महेश्वर के रूप है। वसंत वल्लभराया के दर्शन से पहले गरुड़गंब को देखना चाहिए। अगर कोई मंदिर के अंदर जाने की स्थिति में नहीं है तो गरुडगंब के पास स्वामी की प्रार्थना की जाती हैं, जो अंदर भगवान के सामने प्रार्थना करने और देखने के समान है। वसंत वल्लभराया मंदिर के बाहर बलिपीठ (बलि का आसन, लेकिन शारीरिक बलि देने

के लिए नहीं) है, जहाँ मंदिर के बाहर के अन्य देवताओं को नैवेद्य चढ़ाया जाता है।

मंदिर के बाहर बड़ा परिसर है। मंदिर के सामने छोटा और बहुत प्राचीन श्रीराम और हनुमान जी का मंदिर है। माना जाता है कि वल्लभराया मंदिर निर्माण के समय में हनुमान जी के मंदिर का निर्माण भी हुआ है। हनुमान जी के मुंह में लाल रंग का गेंद है। श्री वसंत वल्लभराया स्वामी मंदिर के समीप पराशक्ति मारम्मा देवी, जो कात्यायनी देवी का मंदिर भी है। मारम्मा देवी वसंतपुरा की ग्राम देवता है। मंदिर के परिसर में बहुत प्राचीन बड़ा भवानी शंकर का मंदिर है, जो छत्रपति शिवाजी से निर्मित किया गया है। शिवजी, विष्णुजी दोनों के अस्तित्व से यह क्षेत्र 'हरिहर क्षेत्र' भी कहा जाता है। यह शैव और वैष्णवों की सहिष्णुता का प्रतीक है। भवानी शंकर मंदिर के सामने पीपल का पेड़ है और उसके नीचे नागर कट्टे (नागदेवता का इमारत) है। इसके प्रदक्षिणा पथ पर अनेक श्रद्धालु बच्चों के लिए और स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हुए पूजा की जाती हैं। मंदिर के समीप गुप्तगिरी गुफा भी है, जहाँ मांडव्य मुनी ने तपस्या की थी। मंदिर के सामने अनेक फूल बेचने वालों के दूकान दिखाई पड़ते हैं।

भगवान का भव्य रूप और पूजा विधि विधान

काली शिला से बनी वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति शंख और चक्रधारी है। अन्य मंदिरों में भगवान श्रीनिवास दाई हस्त को सीधे नीचे की ओर रखते हैं तो यहाँ बालाजी दाई हस्त अभय देने की मुद्रा में हैं। स्वामी के साथ श्रीदेवी और भूदेवी हैं।

हर रोज पांचरात्रागम विधि-विधान के साथ भगवान की पूजा की जाती है। तुलसी अर्चना, अलंकार सेवा, पंचामृत अभिषेक, (भगवान को पंच द्रव्य क्षीर, दही, घृत, मधु, चीनी से अभिषेक किया जाता है, जो पंचामृत अभिषेक कहा जाता है) आदि सेवाएँ करवा सकते हैं। ७:३० से १२:०० तक शाम को ५.०० बजे से ९.०० बजे तक यह मंदिर खुला रहता है।

पुष्करिणियाँ

पुराणों के अनुसार इस घने जंगल में अनेक जलाशय थे। श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने पांच जलाशयों में स्नान किये थे, इससे जो पवित्र बन गए थे। इतिहास के अनुसार माना जाता है कि मराठों के पालन में लगभग १६०० ई. में यहाँ शिवाजी के पिता षहाजी भोंसले ने कल्याणि (पुष्करिणी) का निर्माण करवाया था। कालांतर में घना अरण्य प्रदेश को थोड़ा-थोड़ा खेती काम के लिए नाश करना प्रारंभ किया गया। बाद में १९८० के बाद नागरीकरण और स्वार्थ के कारण यहाँ के अरण्य और तीन तीर्थों के नामोनिशान ही मिट गये। केवल दो तीर्थ, चक्रतीर्थ और वसंततीर्थ ही बच गए। ये भी कूड़ा-करकट भरकर अवसान दशा में थे। हालांकि, इन्फोसिस फाउंडेशन चेयरपर्सन (अध्यक्ष) डॉ.श्रीमती सुधा मूर्ति द्वारा वसंततीर्थ का पुनरुद्धार किया गया। अब यह अत्यंत रमणीय पुष्करिणी है। इस कल्याणी के बीच में एक मंडप है जिस पर शंक, चक्र और तीन नाम दिखाई पड़ते हैं। पुष्करिणी के पश्चिम की ओर एक मंच है जिस पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

उत्सव

रथोत्सव

रथोत्सव को ९ दिनों तक भगवान की पूजा और हवन (होमम्) करने के संकल्प से किया जाता है। ९ दिनों में अनेक उत्सव मनाएँ जाते हैं। २०१० में यहाँ रजत रथ का निर्माण किया गया। इसमें भगवान को बिठाकर रथोत्सव वैभव से मनाया जाता है।

ब्रह्मोत्सव

ब्रह्मोत्सव का अर्थ है 'ब्रह्म का उत्सव'। यह उत्सव नौ दिनों तक मनाया जाता है। हर वर्ष माघ मास में मघा नक्षत्र में ब्रह्मोत्सव २१ दिनों तक मनाया जाता है। साधारणतया रथसप्तमी के दूसरे दिन से ब्रह्मोत्सव शुरू होता है और तिरुनक्षत्र के अनुसार पूर्णिमा तक चलता है। ब्रह्मोत्सव के

पिछले दिन बालाजी के उत्सवमूर्ति को गुप्त गुफा तक जुलूस होकर ले जाते हैं, जहाँ मांडव्य मुनी ने तपस्या की थी। वहाँ चक्रतीर्थ के पवित्र जल को लेकर गर्भगृह में भगवान का अभिषेक किया जाता है। ब्रह्मोत्सव के समय चक्रस्नान तथा प्लवोत्सव वसंततीर्थ में मनाये जाते है। प्रधान अर्चक जुलूस होकर उत्सवमूर्ति को वसंततीर्थ में तीन बार डूबाना चक्रस्नान है और उत्सवमूर्ति को इस पुष्करिणी में तीन बार परिक्रमा करवाना प्लवोत्सव (नौका विहार) है। इस उत्सव को बड़ी आडंबरता के साथ मनाते है। स्वयं भगवान श्रीनिवास अनेक प्रकार से अलंकृत होकर शोभायमान दिखाई पड़ते हैं। मंदिर के चारों ओर फूल और विद्युत की रोशनी से जगमगा उठता है, जैसा कि यह भूलोक वैकुंठ है। उस समय दूर-दूर से लोग यहाँ आकर भगवान से प्रार्थना करते हैं। मंदिर का परिसर गोविंद नाम स्मरण से गूंज उठता हैं। श्रावण मास के शनिवार और एकादशी के दिन भी मंदिर में विशेष अलंकार और पूजा अभिषेक आदि किये जाते है। उत्सवों के समय भगवान विशेष अलंकार से अलौकिक दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि भगवान विष्णु अलंकार प्रिय हैं। उस समय मंदिर के परिसर में अनेक तरह के दुकाने खोले जाते हैं।

वसंत वल्लभराया को कल्याणोत्सव सेवा

यहाँ भक्तों का दृढ़ विश्वास है कि जिनकी शादी नहीं हुई, वे इस मंदिर में भगवान को कल्याणोत्सव करवाके, कंकण को बांधवाना है। उनको एक मंडल अर्थात ५८ दिनों के अंदर ही विवाह हो जाता है। शादी संपन्न होने के पश्चात ही भगवान की पूजा करके कंकण को विसर्जित किया जाता है। यहाँ साल में लगभग हर रोज कल्याणोत्सव मनाए जाते हैं। कल्याण उत्सव कराने के बाद अनेक लोगों की शादी होने के सबूते भी मिलते हैं।

संतान गोपाल कृष्ण सेवा

श्री गोपाल कृष्ण को रोहिणी नक्षत्र में १६ हफ्ते क्षीराभिषेक करवाके उस दूध को पति-पत्नी भगवान की सन्निधि में पीने से, जिनको संतान नहीं, उनको संतान प्राप्ति होती है। इस सेवा करने के बाद अनेक लोग अपने संतान के साथ वापस आकर भगवान की पूजा करवाते हैं।

उत्सवों के अलावा त्योहारों के दिनों में मंदिर में विशेष अलंकार और पूजा की जाती है और भक्तों को नैवेद्य वितरित किया जाता है। भवानी शंकर मंदिर में शिवरात्रि उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। भगवान शंकर के रथोत्सव मनाया जाता है।

मंदिर का महत्व

भगवान वेंकटेश्वर की महिमा अपार है। उनकी कृपा दृष्टि से असाध्य भी साध्य बन जाता है। गुप्तगिरि पहाड़ के ऊपर इस्कान मंदिर (कृष्णलीला थीम पार्क) के निर्माण के दौरान अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा; निर्माण कार्य रुक सा गया। वसंत वल्लभराया मंदिर के अर्चक के सुझाव पर महीने में पहले शनिवार को भगवान वेंकटेश्वर का अभिषेक तथा अलंकारों की सेवा तथा भक्तों को प्रसाद वितरण का संकल्प लेकर, वैसे ही आचरण करने के उपरांत निर्माण कार्य सुगमता से चालू हैं। गरीब होने पर भी निष्ठा से जो भगवान की प्रार्थना और सेवा करते हैं, उन को भगवान के आशीर्वाद से सकल ऐश्वर्य प्राप्त होने के दृष्टान्त भी है।

यह क्षेत्र पौराणिक, चारित्रिक, परंपरा और आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह मंदिर अनेक विशिष्टताओं को अपने में समाया हुआ है। यह भी माना जाता है कि जो तिरुपति जाने में असमर्थ है वो उसी प्रकार के पुण्य तथा आशीर्वाद वसंत वल्लभराया स्वामी के दर्शन करके प्राप्त कर सकते हैं। सच्चे मन से भक्ति पूर्वक प्रार्थना करने से उनकी मनोकामना पूर्ण होती हैं।

कल्याणाद्भुत गात्राय कामितार्थ प्रदायिने।
श्रीवेंकट निवासाय श्रीनिवासाय ते नमः।।

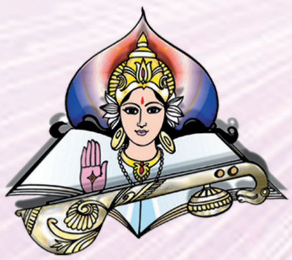

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

मोबाइल - ९९४९८७२१४९

द्वादशः पाठः - द्वादश पाठ

1. पाकः = खाना बनाना
2. कथम् = कितना
3. अकरोत् = किया था
4. नमस्कारः = नमस्ते
5. एवम् = ऐसे
6. अकरोः = तुमने किया
7. व्यापारः = व्यापार
8. इत्थम् = इस प्रकार
9. अकरवम् = मैंने किया

प्रश्न : (अ)

1. ब्राह्मणः स्नानं अकरोत्।
2. अहं पाकं करोमि।
3. त्वं स्नानं अकरोः।
4. बालकाः नमस्कारं कुर्वन्ति।
5. अहं नमस्कारान् अकरवम्।
6. के व्यापारं कुर्वन्ति?
7. त्वम् एकं व्यापारं अकरोः खलु!
8. त्वं कथं स्नानं अकरोः?
9. इत्थं अकरवम्।
10. अहो! यूयं अद्यैव स्नानं कुरुथ किम्?

जवाब : (अ)

1. ब्राह्मण ने स्नान किया!
2. मैं पका रहा हूँ।
3. तुम नहा रहे हो लड़के।
4. सलाम कर रहे हैं लड़के।
5. मैंने प्रणाम किया।
6. व्यापार कौन कर रहा है?
7. क्या आप अकेले व्यापार कर रहे है।
8. तुम कब से नहा रहे हो?
9. इसे मैंने किया है।
10. इतना ही! क्या आपने अभी स्नान किया है?

प्रश्न : (आ)

1. हमने सलाम नहीं किया।
2. क्या आपने प्रणाम किया।
3. लड़के ऐसे क्यों सलाम कर रहे हैं।
4. क्या लड़के है।
5. है ना! हम भी लड़के
6. हम भी बालक की तरह होंगे।
7. कल खाना कैसा चल रहा है?
8. भगवान मौजूद है।
9. आज रात खाना कैसा है।
10. मैंने नाश्ता कर लिया।

जवाब : (आ)

1. वयं नमस्कारान् न कुर्मः।
2. किं त्वं नमस्कारान् अकरोः?
3. किमर्थं बालाः तथा नमस्कारान् कुर्वन्ति?
4. किं वा ते बालाः एव किल।
5. यूयं बालाः न किम्।
6. वयमपि बालाः एव।
7. श्वः पाकः कथम्?
8. देवः एव अस्ति।
9. अद्य रात्रौ भोजनं कथम्?
10. अहं प्रातः एव भोजनं अकरवम्।

आयुर्वेद

कमल के औषधीय गुण

- डॉ.सुमा जोषि
मोबाइल - 9449515046

कमल भारत देश का राष्ट्रीय पुष्प है। आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से इसका बडा महत्व है। ईजिप्ट में इसे शुद्धता का प्रतीक माना जाता है। आमतौर पर कमल के फूल का प्रयोग पूजा-पाठ या घरों को सजाने आदि काम में किया जाता है। कमल को प्रयोग कर कई बिमारियों को भी ठीक कर सकते हैं। आयुर्वेदिक ग्रन्थों में कमल से सम्बन्धित अनेक विशेषताए बताई गई हैं। आचार्य सुश्रुत कमलनाल को सर्जरी के लिए प्रयोग लाते थे इसका उल्लेख मिलता है।

कमल का परिचय

कमल एक फूल है जो पानी में उत्पन्न होनेवाली वनस्पती है। इसकी तीन प्रजातियाँ होती हैं-

१) कमल : इसके पत्ते चौडे होते हैं जो थाली की तरह पानी में तैरते हुए दिखाई देते हैं। इसके फूल अत्यंत सुन्दर व बडे होते हैं। रंग-भेद के अनुसार कमल कई प्रकार होते हैं।

२) कुमुद : कुमुदानी का स्वरूप साधारणतया कमल के जैसा ही होता है। लेकिन इसके पत्ते कमल के पत्ते से छोठे, चमकीले, चिकने, जल की सतह पर तैरनेवाले होते हैं। इसके फूल सफेद तथा ५-१२ c.m. व्यास के होते हैं।

३) उत्पल : इसके पत्ते पानी की सतह पर तैरनेवाले तथा इसके फूल नीले रंग के होते हैं।

लैटिन नाम - Nelumbo nucifera Gaerfn., Nymphaea Nelumbo Linn, Nelum bium Speciosum; कुल का नाम (Family)- Nelumbonaceae; कन्नड में - पद्म, कमल, तावरे; तेलुगु - तामर पुवू; हिन्दी - कमल; अंग्रेजी - सेक्रेड लोटस्; संस्कृत - पद्म, नलिन, पुष्कर, पुण्डरीक (सफेद), कोकनाद, (लालकमल), इन्दीवर, (नीलकमल) इत्यादि।

रासायनिक संगठन

रोबिनिन, न्युसिफेरिन्, अस्मिलोबैन, लिरिनिडिन, फ्लेवनाइड्स इत्यादि।

आयुर्वेदिक औषधीय गुण

रस - कषाय, मधुर, कडवा; वीर्य - शीतवीर्य; गुण - लघु (हलकापन), स्निग्ध (चिपिचिपा), पिच्छिल; विपाक - मधुर (जीर्ण के बाद मधुर हो जाता है); कफ और पित्त के लिए अच्छा है।

आरोग्य में कमल का उपयोग

१) उत्पल तथा दूध को मिला लें। इसे मिट्टी के बर्तन में एक महीने तक जमीन में दबाकर रखें। इसे निकालकर बालों में लगाने से बाल स्वस्थ होते हैं तथा बालों का पकना कम होता हैं।

२) नीलकमल के केशर को तिल तथा आँवले के साथ पीस लें। इसमें मुलेठी गिलाकर सिर में लेप करने से रूसी खत्म होती है।

३) अनन्तमूल, कूठ, मुलेठी, वच, पीप्पली और नीलकमल लें। इन ६ द्रव्यों को काञ्जी में पीसकर, थोडा, एरण्ड तेल मिला लें। इसका लेप करने से आधासीसी या अधकपारी तथा सूर्य उगने के बाद होने वाले सिर के दर्द में लाभ मिलता है।

४) कमल के भुने हुए छिलका रहित बीजों को १-२ ग्राम की मात्रा में लें। इसमें मधु मिलाकर सेवन करने से उल्टी बन्द हो जाती है।

५) शतावरी, नीलकमल, दूब, काली तिल तथा पुनर्नवा लें। इन ५ द्रव्यों को जल में पीसकर लेप करने से सभी तरह के सिरदर्द में लाभ मिलता है।

६) बराबर भाग में नीलकमल, बहेडा फलमज्ञा, तिल, अश्वगन्धा, अर्ध-भाग प्रियंगु के फूल तथा सुपारी त्वचा को पीस

लें। इसे सिर में लेप करने से गंजेपन की समस्या में लाभ होता है।

७) कमल के फूल से दूध निकाल लें। इसे काजल की तरह आंखों में लगाने से आंखों के रोग ठीक होते हैं।

८) कमल की जड को चबाने से दान्तों के कीडे खत्म होते हैं।

९) १-२ ग्राम कमल की बीज के चूर्ण में शहद मिलाकर सेवन करें। इससे पित्त दोष के कारण होनेवाली खांसी ठीक हो जाती है।

१०) कमल के १-२ ग्राम पत्तों के चूर्ण में चीनी मिला लें। इसे खाने से गुदभ्रंश (गुदा का बाहर आना) में लाभ होता है।

११) सुबह-सुबह २ ग्राम कमल की जड के पेस्ट को गाय के घी के साथ मिलाकर सेवन करें। इससे गुदभ्रंश तथा इसकी वजह से होनेवाले बुखार में लाभ मिलता है।

१२) कमल एवं नीलकमल से बने १०-२० एम.एल. शीतकषाय (रात भर ठण्डे पानी में रखने के बाद तैयार पदार्थ) या हिम में मधु एवं चीनी मिला लें। इसे पीने से पेशाब में दर्द और जलन की समस्या ठीक होती है।

१३) तैल में पकाये हुए २-४ ग्राम कमलकन्द को गाय के मूत्र के साथ सेवन करें। इससे पेशाब में दर्द की समस्या में लाभ होता है।

१४) कमल का काढ़ा बनाकर १०-२० एम.एल. मात्रा में सेवन करने से बुखार में लाभ होता है।

१५) बराबर भाग में उत्पल, अनारफल की छाल तथा कमल केसर चूर्ण (१ से २ ग्राम) लें। इसे तण्डुलोदक (चावल के धोवन) के साथ सेवन करने से बुखार के साथ होने वाली दस्त में तुरन्त लाभ होता है।

१६) पित्तज दोष के कारण दस्त हो रही हो या पेचिश हो जाए तो बराबर भाग में कमल, नीलकमल, मंजिष्ठा तथा मोचरस्स लें। इन्हें १०० एम.एल. बकरी के दूध में पका कर सेवन करें।

१७) १०० एम.एल. बकरी के दूध में आधा भाग जल, १ से २ ग्राम सुंधबाला, २-४ ग्राम नीलकमल, १ ग्राम सोंठ का चूर्ण और ५ से १० एम.एल. पृश्निपर्णी रस मिला लें। इससे दस्त पर रोक लगती है।

१८) सफेद कमल केसर के पेस्ट में खाँड, चीनी तथा मधु मिला लें। इसको चावल के धोवन के साथ सेवन करने से पेचिश ठीक होता है।

१९) चीनी तथा कमल के केसर को मिलाकर मक्खन के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

२०) बराबर भाग में चीनी, कमल नाल तथा तिल के २-४ ग्राम चूर्ण में मधु मिलाकर सेवन करने से गर्भपात की संभावना कम हो जाती है।

२१) दूसरे महीने होने वाले गर्भपात को रोकने के लिए कमल नाल को नागकेसर के साथ मिलाकर दूध के साथ दिन में दो बार सेवन करना चाहिए।

२२) कमल-नाल, कमलगड्डा तथा उशीर को तेल में पकाए। इसे योनि पर लेप करने से योनि से आनेवाली बदबू और योनि के ढीलेपन की समस्या में लाभ होता है।

२३) कमल की जड को पानी में पासकर लेप करने से दाद, खुजली, कुष्ठ रोग और अन्य त्वचा रोगों में फायदा होता है।

२४) १-२ ग्राम कमल केसर को पीस लें। इसमें मधु मिलाकर खाने से शरीर की जलन खत्म हो जाती है।

२५) १-२ ग्राम कमल केशर को बराबर भाग में काली मिर्च के साथ पीस लें। इसे पियें और सांप के काटे जाने वाले स्थान पर लगायें। इससे सर्प के काटने से होनेवाला दर्द, सूजन आदि में बहुत लाभ होता है।

इस प्रकार से और भी अनेक प्रयोगविधियाँ हैं। यहाँ पर सिर्फ ज्ञानमात्र के लिए दिया गया है। एक आयुर्वेद के डाक्टर की सलाह पर ही लें। प्रकृति के हिसाब से औषध की प्रयोगविधी भी अलग होती है।

नीतिकथा

भक्ति का बल

- श्रीमती के प्रेमा रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

राम और श्याम गहरे मित्र थे और वे दोनों एक ही गाँव में रहते थे। राम भगवान विष्णु का बडा भक्त था, पर श्याम को भगवान के प्रति विश्वास नहीं था। एक दिन वे दोनों अपने काम पर कहीं दूर किसी गाँव में गए थे। वापस आने में रात हो गयी थी। उनको जंगल पार करके अपना गाँव पहुँचना था। उन दोनों ने उस अंधेरी रात में जंगल पार करना खतरनाक समझा। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि यहाँ किसी पेड पर चढकर रात का समय बिता देंगे। जिससे जंगली जानवर से अपने को बचा सकते हैं। इस पर वे दोनों एक पेड पर चढने लगे। दुर्भाग्यवश पेड की डाली टूट गयी थी और वे दोनों नीचे एक गहरे कुएँ में गिर गए। उन दोनों को तैरना आता था। इसलिए वे बच गए थे। परंतु रात में कुएँ से बाहर आना कठिन था। इसलिए वे दोनों सूर्योदय तक वहीं ठहर गए थे।

अगले दिन सूर्य के उदय होते ही उन्होंने देखा कि वे दोनों ऐसे गहरे कुएँ में गिर गए हैं। वहाँ से बाहर आने के लिए कोई सीढी भी नहीं है। यह देखकर श्याम मन मसोसकर रह गया। उसने अपने मित्र से कहा, ''इस घने जंगल में हमें बचाने के लिए कौन आएग, इसलिए हमारी मृत्यु निश्चित है।'' परंतु राम ने अपना विश्वास नहीं छोडा, उसे भगवान के प्रति अडिग विशावास था। उसने सोचा कि वे किसी न किसी तरह हमें बचा देंगे। उसने थोडे समय तक शांत रहा, और उसने वहाँ एक बडे पेड की जड को देखा। तुरंत उसे एक उपाय सूझा। उसने एक पत्थर से उस जड को काटकर दो लकडी तैयार कर ली। उसने अपने मित्र से कहा, ''इस लकडी की मदद से हम ऊपर चढ सकते हैं और अपने प्राण बचा सकते हैं। इसलिए हम दोनों प्रयास करेंगे और आगे चढेंगे।'' परंतु श्याम तो एकदम डरा हुआ था। उसमें ऐसा करने की हिम्मत नहीं थी। इसलिए वह ऐसा करने को तैयार नहीं हुआ।

राम को उसे अकेले छोडकर जाने की इच्छा नहीं थी। वह जानता था कि सच्चा मित्र खतरे में हाथ देता है। इसलिए उसने थोडे समय तक सोचा। फिर मित्र को देखकर कहा,

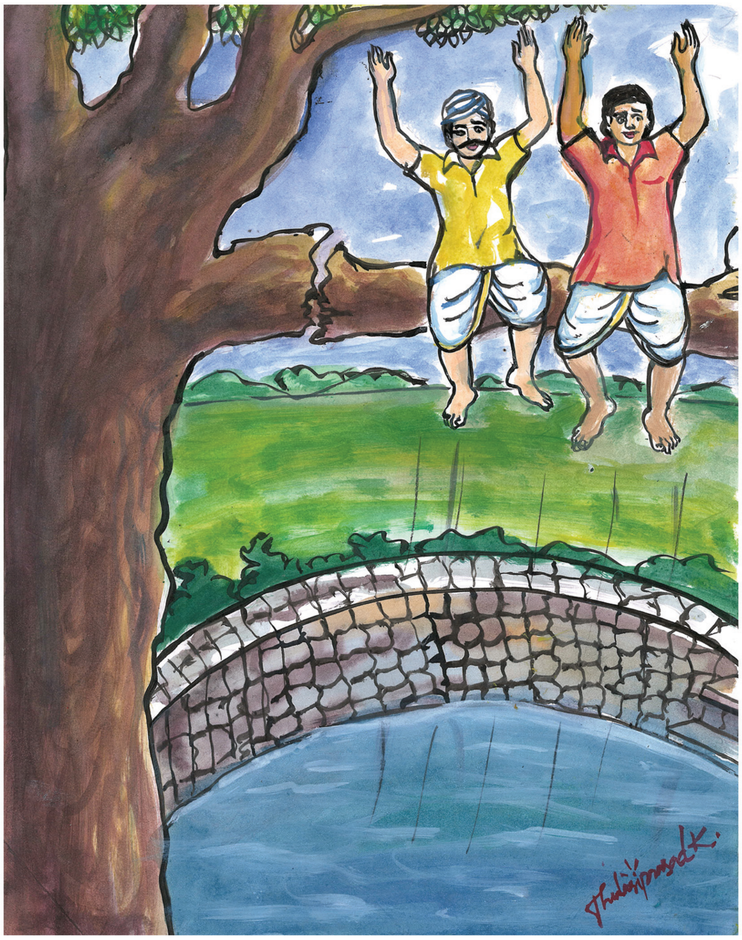

''प्रिय मित्र, मुझे एक मंत्र वाक्य मालूम है। उसे कहने पर हम नीचे नहीं गिरेंगे। मैं तुमको वह मंत्र वाक्य बताता हूँ। यदि तुम उस वाक्य को रटोगे तो नीचे नहीं गिरोगे।'' यह सुनकर श्याम के मन में थोडा विश्वास जाग उठा। उस ने खुशी से पूछा, ''वह क्या मंत्र वाक्य है?'' राम ने कहा, ''ॐ नमो नारायणाय।'' तु इस मंत्र वाक्य को चढते समय रटते रहोगे तो नीचे नहीं गिरोगे।

यह सुनकर श्याम अब बडी हिम्मत से लकडी ली और उसकी मदद से चढने को तैयार होगया। वह मित्र से बताये गये मंत्र को रटते हुए ऊपर चढने लगा। उसके मन से अब डर हट गया और वह हिम्मत से चढकर कुएँ से सुरक्षित बाहर आ पहुँचा। मंत्र वाक्य के प्रभाव पर उसे बडा आश्चर्य हुआ। बाहर आते ही श्याम ने अपने मित्र से पूछा, ''मित्र, तुम्हारे मंत्र वाक्य से ही अब मैं जिंदा हूँ। तुमने इस प्रभावशाली मंत्र वाक्य को कहाँ सीखा?'' राम ने जवाब देते हुए कहा, ''प्रिय मित्र, यह तो भगवान विष्णु की उपासना का वाक्य है। इस मंत्र को बडे विश्वास के साथ कहेंगे तो वे हमें दुख और संकट से बचाएँगे।''

राम की बात से अब श्याम के मन में भगवान के प्रति भक्ति भावना जागृत हो उठी। तब से वह भगवान का बडा भक्त बन गया।। असली दोस्त कष्ट के समय में दोस्त को न छोड़ते है।

नीति पद्यम्

4

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

ओगु बागेरुगक युत्तमूढ जनंबु
लिल सुधी जनमुल नेंच जूचु
करिनि गांचि कुक्क मोरिगिन चंदमौ
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।४।।

सत्-असत् एवं भले-बुरे की पहचान न रख कर मूर्ख लोग सज्ञनों की निंदा करते रहते हैं, उनकी त्रुटियाँ गिनाने में ही तत्परता दिखाते हैं। घंटा-पथ में चलने वाले मस्त हाथी को देख कुत्ते भूँक-भूँक कर अपना अनाड़ीपन ही तो दर्शाते हैं।

चित्रकथा

तिरुप्पावै

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री के.तुलसीप्रसाद

1 विष्णुचित्त की लाडेली बेटी आण्डाल थी। श्रीरंगनाथ को पति के रूप में पाने और लोक कल्याण के लिए आण्डाल ने अपनी सहेलियों से मिलकर तिरुप्पावै व्रत (श्रीव्रत) करने का संकल्प कर लिया। आण्डाल ने सहेलियों से कहा -

17
गोविंदा तुम्हारी कृपा दृष्टि से हमारे पापों को दूर करो। हम को उद्धार करो।
18
गोविन्दा! माधवा!
19
हमारा जीवन को उद्धार करो। तुम से शरणागत को प्राप्त किये।
20
दुष्टों का वध करने वाले आप के वीर चरित का गान करना हमारा भाग्य है।
21
हे स्वामी! हमारे मन में किसी प्रकार की इच्छाएँ नहीं है। आप से मिलकर श्रीव्रत दिव्य प्रसाद का सेवन करेंगे।
22
हम हमेशा आप से ही रहेंगे। आप की सेवा में ही तरेंगे स्वामीजी।
23
हमारा रिश्ता अटूट और अभेद है गोविन्दा!
24
श्रीव्रत संपूर्ण हुआ। आण्डाल की इच्छा पूरी हुई। वह रंगनाथ में विलीन हो गयी।
25
सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु!
स्वस्ति।

'क्विज'

आयोजक - डॉ.एन.दिव्या

१) विदुर किसका पुत्र था?

अ) अंबा आ) अंबिका इ) दासी ई) अंबालिका

२) इन्द्रप्रस्थ के निर्माण के पश्चात युधिष्ठर ने जो यज्ञ किया था उसका क्या नाम था?

अ) अश्वमेध आ) राजसूय इ) वैष्णव ई) नाग

३) महाभारत युद्ध कहाँ हुआ?

अ) कुरुक्षेत्र आ) धर्मक्षेत्र इ) पुण्यक्षेत्र ई) यागक्षेत्र

४) तिरुप्पावै का पठन वैष्णव मंदिरों में किस मास में करते हैं?

अ) श्रावणमास आ) माघमास इ) धनुर्मास ई) कार्तिकमास

५) मत्स्यगंधी किसका नाम है?

अ) द्रौपदी आ) सत्यवती इ) सुभद्रा ई) पृथा

६) पांडवों ने अज्ञातवास में अपने आयुधों को किस वृक्ष में छुपाए थे?

अ) आम आ) बरगद इ) शमी ई) पीपल

७) 'अलंकार प्रिय' के नाम से किस भगवान को पुकारते हैं?

अ) बालाजी आ) सूर्य इ) ईश्वर ई) गणेश

जवाब

१) इ २) आ ३) अ ४) इ ५) आ ६) इ ७) अ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

दि. ११-११-२०२१ को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामीजी को संपन्न पुष्पयाग महोत्सव के दृश्य।

दि. ०४-११-२०२१ को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में शास्त्रोक्त रूप में संपन्न दीपावली आस्थान में श्रीश्रीश्री बडा जीयंगार, श्रीश्रीश्री छोटा जीयंगार, ति.ति.दे. ई.ओ., सी.वी. अण्ड एस.ओ. और ति.ति.दे. अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया है।

दि. २०-१०-२०२१ को तिरुपति श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर में अन्नाभिषेक कार्यक्रम को संपन्न किया है।

दि. ३१-१०-२०२१ से ०२-११-२०२१ तक संपन्न श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का पवित्रोत्सव के दृश्य।

दि. १३-११-२०२१ को भारत देश के गृह मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी, अं.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी ने श्री बालाजी का दर्शन किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. ई.ओ. और ति.ति.दे. अध्यक्ष जी ने स्वागत किया और अर्चकों ने वेदाशिर्वचन दिया था।

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-11-2021 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.